कोडः बीडीजीपी01

गुड प्रैकटिस नोट

रोगों का शमन और मूल्यवान संपत्ति की सुरक्षा

क्षेत्र ः दक्षिण एशिया
देश ः बांग्लादेश

साउथ एशिया
प्रो-पुअर लाईवस्टोक पोलिसी प्रोग्राम
राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड और सयुंक्त राष्ट्र के खाद्य एवम् कृषि संगठन का उपकम

रोगों का शमन और मूल्यवान संपत्ति की सुरक्षा

लेखकः	एम ए सालेक, पंकज कुमार पॉल, हारून उर राशिद
समीक्षकः	ए जी खान, विधन चंद्र रॉय, वी आर पाटिल, दिवान ज़ाहिद, लैम शैरिंग, जी के शर्मा, उगो पीका-सीयामारा, प्रकाश शिंदे, तौचू रावगे, योनटेन दोरजी
योगदानकर्ताः	मोनीर उल हसन, शफीक उर रौफ
पाठ संपादकः	लूसी मार्स, ममता धवन, शिफाली मिसरा
हिन्दी अनुवादः	प्रकाश शिंदे, शीला कोयाना, रुचिता खुराना, एन के शर्मा

© SA PPLPP
कॉपीराईट से संबंधित अधिक विवरण के लिए SA PPLPP के वेबसाइट http://sapplpp.org/copyright पर संपर्क करें।

आभार

बेहतर तौर- तरीकों (जीपी) की पहचान गरीबोन्मुख पशुधन विकास, प्रलेखन तैयार करने की क्षमता और अभिकर्ताओं को संवेदनशील बनाने के लिये सरल माध्यमों के इस्तेमाल, गठबंधन बनाने, तथा नीति निर्धारण को प्रभावी बनाने और उसके क्रियान्वयन के साथ होती हैं। एक काफी कठोर एवं थका देने वाली प्रक्रिया के माध्यम से, एसए पीपीएलपीपी की टीम ने जीपी (गुड प्रैक्टिस) नोट तैयार करने तथा पहचान करने के लिये दिशानिर्देशों* का एक सेट विकसित किया है। भूटान, बांग्लादेश और भारत की टीमों ने चरणबद्ध तरीके से गरीब पशुधन पालकों से संबंधित छोटे पोल्ट्री, छोटे समूहों, और पशुधन एवं सामान्य सम्पत्ति संसाधन जैसे विभिन्न विषयों में गुड प्रैक्टिस की संभावनाओं का दोहन करने तथा उनकी पहचान करने की दिशा में काफी प्रगति की है।

आठ मार्च को ढाका में एसए पीपीएलपीपी के सहयोगी संस्थान ब्राक के मध्यम श्रेणी के अधिकारियों के लिये आयोजित कथा वाचन कार्यशाला में इस गुड प्रैक्टिस (बीडीजीपी01) की अवधारणा सामने आयी। एक भागीदार द्वारा तैयार की गयी एक कहानी को बेहतर तौर- तरीके के रूप में देखा गया और इस बात पर सहमति बनी कि पंकज कुमार पॉल, डा. हारून उर राशिद और डा. एम ए सालेक एक गुड प्रैक्टिस नोट तैयार करेंगे। गुड प्रैक्टिस नोट के पहले संस्करण को अप्रैल, 2008 में ब्राक ने एसए पीपीएलपीपी को भेजा। चूंकि गुड प्रैक्टिस नोट के संस्करण में काफी जानकारियां थीं, इसलिये लेखकों को लर्निंग इवेंट** में भाग लेने के लिये आमंत्रित किया गया। इस आयोजन को तीन देशों के गुड प्रैक्टिस मालिकों तथा जीपी समर्थकों के लिये एक बेहतर अवसर के तौर पर देखा गया ताकि वे इस क्षेत्र के विशेषज्ञों के साथ एक मंच पर आयें और उनके साथ मिलकर पहचानी गयी जी पी का विश्लेषण एवं व्याख्या करें। जीपी नोट पर गहन विचार- विमर्श हुआ और लेखक वहां से प्राप्त टिप्पणियों एवं प्रतिक्रियाओं के आधार पर इस संस्करण को दोबारा तैयार करने के लिये प्रेरित हुये। दूसरा संस्करण 2008 के जुलाई माह में प्राप्त हुआ। इस मसौदे पर आंतरिक बैठकों में विचार हुआ। डा. ममता धवन और शीला कोयाना ने इसका संपादन किया और इसे तीसरे संस्करण के तौर पर प्रबंधन बोर्ड की बैठक में प्रस्तुत किया गया। यह महसूस किया गया कि जीपी नोट में अभी भी कई आंकडों और लागत लाभ विश्लेशण की कमी है। बंगला देश में मोनिरूल हसन ने कई जमीनी दौरे किये और जिससे आंकड़े जमा हुये और अगले संस्करण के लिये इनका विश्लेषण किया गया जो 2008 के अक्तूबर माह में प्राप्त हुआ। इस संस्करण को इस क्षेत्र के विशेषज्ञों ने समीक्षा के लिये भेजा और इस दौरान प्राप्त प्रतिक्रियाओं से इसके लेखकों को अवगत कराया गया। आखिरकार पांचवां संस्करण तैयार हुआ जिसमें सभी तरह के मात्रात्मक एवं गुणात्मक आंकड़ों को शामिल किया गया तथा इसमें टीकों के तकनीकी पहलुओं को भी दर्ज किया गया। दिसंबर 2008 को यह संस्करण हासिल किया गया। हालांकि गुड प्रैक्टिस को दिल्ली में क्षेत्रीय कार्यालय तथा

---

* दिशानिर्देश www.sapplpp.org/mainpage-information-hub पर उपलब्ध है

** लर्निंग इवेंट के कार्यवाही की अधिकृत रपट www.sapplpp.org/informationhub/learning_event_small_scale-poultry-production-proceedings पर उपलब्ध है

ब्राक के बीच कई बार भेजा गया और हर बार इसमें सुधार किया गया, यह भी महसूस किया गया कि जीपी नोट्स को तैयार करने में तकनीकी विशेषज्ञों और इसे लिखने वालों की ओर से काफी प्रयास की जरूरत होती है। इसके अलावा इसे लिखने के लिये भी मेहनत चाहिये। डा. ममता धवन (एसए पीपीएलपीपी) और सुश्री शेफाली मिश्रा (एसए पीपीएलपीपी) ने अंदरूनी अनुसंधान किये और छठा संस्करण तैयार किया। आखिरकार लूसी मार्से (एसए पीपीएलपीपी) ने सांतवां और अंतिम संस्करण तैयार किया। अनेक लोगों ने गुड प्रैक्टिस नोट में योगदान दिया और हर इनपुट से चाहे वे छोटे ही क्यों नहीं थे, उससे संस्करणको सुधारने और बेहतर बनाने में मदद मिली।

हालांकि पहले संस्करण को जमा करने से लेकर इसे अंतिम रूप देने में एक साल का समय लगा, लेकिन जिन लोगों ने इसमें योगदान दिया उनके लिये यह सीखने का भी माध्यम था और इसके जरिये उन्हें जीपी के बारे में समझ विकसित करने में मदद मिली। अब इन लोगों को सही में जीपी चैम्पियंस कहा जा सकता है।

1. प्रस्तावना

1.1 बांग्लादेश में कुक्कुट (पोल्ट्री) क्षेत्र

बांग्लादेश में 147,570 वर्ग किलोमीटर का कुल भूमि क्षेत्र है। यह दुनिया का सबसे अधिक आबादी वाले देशों में से एक है। इसकी कुल आबादी करीब 14 करोड़ है। यहां के ज्यादातर लोग, आबादी में से लगभग 85 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं। बांग्लादेश में जनसंख्या घनत्व 1,075 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है और यह दुनिया में सबसे अधिक जनसंख्या घनत्व में से एक है। उच्च जनसंख्या घनत्व की तरह ही यहां मुर्गियों का घनत्व भी अधिक है और यह 1,194 मुर्गियां प्रति वर्ग किलोमीटर (1,460 प्रति वर्ग किलो मीटर बत्तखों समेत) है (डोलबर्ग,2008)। बांग्लादेश आर्थिक समीक्षा, 2008 के अनुसार देश की आबादी का 40.4 प्रतिशत हिस्सा गरीबी रेखा से नीचे अपना जीवन बसर करता है और आबादी का 20 प्रतिशत हिस्सा अत्यधिक निर्धन श्रेणी में आता है। भूमि – ग्रामीण क्षेत्रों में एकमात्र सर्वाधिक महत्वपूर्ण संसाधन का बटवारा बहुत असंतुलित तरीके से हुआ है – 59 प्रतिशत परिवारों के पास 0.20 हेक्टेयर से भी कम जमीन है, 32 प्रतिशत के पास एक हेक्टेयर से कम जमीन है जबकि केवल नौ प्रतिशत परिवारों के पास एक हेक्टयर से अधिक जमीन है। (डीएलएस (पशुधन विभाग), 2008)। महिलायें खास तौर पर वंचित वर्ग में आती हैं जिनमें उच्च मृत्यु दर, कम साक्षरता दर, खराब स्वास्थ्य स्थितियां एवं जिनके पास रोजगार के सीमित अवसर हैं (सालेक, 2007)। बांग्लादेश में 1970 के दशक में आर्थिक विकास 1-2 प्रतिशत था जो 1980 के दशक में बढ़कर 3-4 प्रतिशत , 1990 के दशक में 4-5 प्रतिशत और 2000 के बाद यह पांच प्रतिशत से अधिक हो गया है, जो देश में जारी राजनीतिक उतार-चढ़ाव के बावजूद साल दर साल तीव्र आर्थिक विकास का परिचायक है (रहमान, 2006)। बांग्लादेश में पशुधन क्षेत्र में विकास भी सतत् बना रहा है[1]।

वर्ष 2004-2005 में अन्य उप क्षेत्रों की तुलना में पशुधन के लिये सकल घरेलू उत्पाद का विकास दर सबसे अधिक 7.2 प्रतिशत रहा जबकि फसलों के क्षेत्र में यह 0.2 प्रतिशत और मछली पालन में 3.7 प्रतिशत रहा। इस विकास में पोल्ट्री का प्रमुख योगदान है। इस वृद्धि का एक कारण आमदनी में वृद्धि, जनसंख्या बढ़ोतरी और शहरी विकास है जिसके कारण कुक्कुट उत्पादों की उच्च मांग पैदा हुयी। एशियाई विकास बैंक के एक आकलन से पता चलता है कि बांग्लादेश में वाणिज्यिक कुक्कुट क्षेत्र में 2007 तक 20 प्रतिशत प्रतिवर्ष तक की वृद्धि हुई और 50 लाख लोगों को परोक्ष एवं अपरोक्ष तौर पर 150,000 वाणिज्यिक फार्मो के माध्यम से सहारा मिला। (एडीबी, 2007)

तालिका 1: स्थानीय कुक्कुट आबादी (दस लाख में)							
विवरण	**वर्ष**						
	2000	**2001**	**2002**	**2003**	**2004**	**2005**	**2006**
परतें – अंडे देने वाली मुर्गियां							
मुख्य स्टॉक	145	236	370	138	344	212	282

[1]राष्ट्रीय पशुधन विकास नीति, मत्स्य और पशुधन मंत्रालय, 2007

डीओसी प्रति वर्ष	13,050	21,240	33,300	12,420	30,960	19,080	25,380
डीओसी प्रति सप्ताह	250	408	640	239	595	367	488
ब्रायलर							
मुख्य स्टॉक	750	1,062	1,382	1,952	2,358	2,292	2,745
डीओसी प्रति वर्ष	90,000	100,359	116,000	163,968	164,148	192,528	288,225
डीओसी प्रति सप्ताह	1,730	1,929	2,230	3,153	3,156	3,702	5,542
स्रोत: सालेक 2007							

इसके अलावा अनुमान है कि वर्ष 2000-2006 के दौरान हर साल देशी मुर्गियों की संख्या करीब 6.7 प्रतिशत से और बत्तखों की संख्या 2.4 प्रतिशत से बढ़ गयी, जैसा कि तालिका 2 में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 2: स्थानीय कुक्कुट की संख्या (दस लाख में)					
विवरण	**वर्ष**				
	2000-01	**2001-02**	**2002-03**	**2003-04**	**2004-05**
मुर्गियां	142.68	152.24	162.44	172.63	183.45
बत्तख	33.83	34.67	35.54	36.40	37.28
स्रोत: पशुधन विभाग, 2008					

विश्लेषणात्मक प्रयोजनों के लिये, एफ ए ओ और ओ आई ई ने मुर्गियों के प्रजनन की चार मुख्य प्रणालियों की पहचान की है। (वर्गीकरण के लिये अनुच्छेद 1 देखें) जिसमें से सेक्टर-3 (लघु पैमाने पर सीमित) और सेक्टर-4 ''ग्राम अथवा पिछवाड़ा प्रणाली'' सामान्य रूप से बांग्लादेश में पोल्ट्री उत्पादन के तौर- तरीकों को प्रदर्षित करते हैं।

बॉक्स 1: बांग्लादेश में पॉल्ट्री उत्पादन प्रणाली का संक्षिप्त विवरण

1. परम्परागत ग्रामीण बैकयार्ड स्कैवेंजिंग व्यवस्था (सेक्टर - 4ए)

इसे अक्सर *स्कैवेंजिंग* अथवा परम्परागत पॉल्ट्री व्यवस्था कहा जाता है। स्कैवेंजिंग शब्द की जगह पर 'मुक्त क्षेत्र' का इस्तेमाल किया जाता है। इस व्यवस्था में देसी पक्षियों की देखभाल परिवार के बच्चों और महिला सदस्यों के जरिये की जाती है और उन्हें घरेलू बचे-कुचे पदार्थों तथा फसलों के अपशिष्ट खिलाया जाता है। गांवों में प्रत्येक घर में औसतन 6-8 मुर्गियां होती हैं। ये पक्षी हर साल 40 से 60 अंडे देते हैं। इनकी उत्पादन विशिष्टता होती है और उत्पादन चक्र के अंत में इनका वजन करीब एक से डेढ़ किलो ग्राम होता है। बाजार में ब्रॉयलर की तुलना में इनकी अधिक कीमत होती है।

2. अर्द्ध स्कैवेंजिंग प्रणाली (सेक्टर - 4बी)

यह परम्परागत प्रणाली का उन्नत रूप है जिसमें टीकाकरण, पूरक आहार और उन्नत नसलके पक्षियों को शामिल किया गया है। इसे उन्नत परम्परा अथवा सुधार मुक्त क्षेत्र कहा जाता है। जबकि बंगला देश में इसे अर्द्ध स्कैवेंजिग प्रणाली कहा जाता है। अनेक घरों ने सुधरे नस्ल के पक्षियों को पालने की परम्परा शुरू की है जिसके तहत उन्हें रात का आश्रय दिया जाता हैं तथा उनका टीकाकरण किया जाता हैं।

3. लघु पैमाने की व्यवसायिक **पॉल्ट्री उत्पादन व्यवस्था (सेक्टर - 3)**

यह वह प्रणाली है जिसमें सुधरे हुये नस्ल के पक्षियों (लेयर्स, ब्रॉयलर्स) को पूर्णत बंद कक्ष में रखा जाता है और उनकी संख्या 500 से कम होती है। इन्हें लघु स्तर का व्यवसाय कहा जाता है। इन पक्षियों को प्रजनन कंपनियों से खरीदा जाता है और उनके उत्पादों को व्यावसायिक आधार पर बेचा जाता है। बांग्लादेश में दो विदेशी नस्लों - जिनके नाम रोड आइसलैंड रेड (नर) और फायोमी (मादा) है। इन्हें आम तौर पर मुख्य पॉल्ट्री फार्मों पर नर-मादा का *क्रॉस* कराया जाता है और उनके पहले अंडे को, जिसे सोनाली कहा जाता है, इस प्रजनन व्यवस्था में पाला जाता है।

4. व्यवसायिक **खेती व्यवस्था (सेक्टर 2)**

इस व्यवस्था को मुख्य तौर पर निजी क्षेत्रों की ओर से संरक्षण दिया जाता है। बांग्लादेश में आम तौर पर 501 से 5,000 तक की इकाई को मध्यम इकाई और 5,000 से अधिक की इकाई को बड़े फार्म माना जाता है (सालेक, 2007)। जैसा कि तालिका 3 में दिखाया गया है, लघु पैमाने की व्यावसायिक इकाइयां अधिक व्याप्त हैं जबकि केवल 4 प्रतिशत इकाइयों में ही 4,000 से अधिक पक्षियों को रखा जाता है।

तालिका 3: वाणिज्यिक फार्मों के आकार

पक्षियों की संख्या	फार्मों के प्रतिशत
200 – 500	48 प्रतिशत
501 – 1,000	26 प्रतिशत
1,001 – 3,000	22 प्रतिशत
>3,000	4 प्रतिशत

स्रोत: सालेक 2007

तालिका 3 से पता चलता है कि आधे से ज्यादा वाणिज्यिक फार्म सेक्टर 3 के तहत आते हैं, जिसमें 200 से 500 तक के पक्षियों की इकाइयां हैं।

बांग्लादेश में 1970 के दशक के आरंभ में छोटी पोल्ट्री इकाई को गरीबी दूर करने के एक माध्यम के रूप में देखा गया और इसलिये मुर्गी पालन कार्यक्रम विकसित और व्यापक तौर पर क्रियान्वित किये गये और देश में इस पेशे को सामाजिक एवं सांस्कृतिक रूप से स्वीकार्यता प्रदान की गयी। बांग्लादेश में

विभिन्न पोल्ट्री परियोजनाओं को लेकर किये गये अनेक सर्वेक्षणों से पता चलता है कि इन कार्यक्रमों में हिस्सा लेने वाले भागीदारों को आय, खपत, पोषण एवं सशक्तता (ब्राक रिपोर्ट, 2000) के संदर्भ में लाभ मिला। आज पोल्ट्री सेक्टर बांग्लादेश में बड़े पैमाने पर गांवों में रोजगार की संभावनायें पैदा कर रहा है और 80 प्रतिशत से अधिक घरों में मुर्गियों का पालन किया जाता है, जबकि कुछ ही घरों में बकरियों एवं अन्य मवेशियों को रखा जाता है (डोलबर्ग, 2003)। जिन परिवारों के पास कोई भूमि नहीं है या 0.2 हेक्टेयर से कम जमीन है, उनके पास पोल्ट्री आबादी का 50 प्रतिशत हिस्सा है (जब्बार, 2007)।

छोटे धारक पोल्ट्री उत्पादन का गरीबी उन्मूलन और महिला सशक्तिकरण के साथ एक मजबूत सह संबंध है, क्योंकि लगभग सभी ग्रामीण परिवारो में 10-20 चिकन बत्तख, या कबूतर रखे जाते है जिनका पालन-पोषण स्कैवेंजिग अवस्था में मुख्य रूप से महिलाओं द्वारा होता है (सालेक, 2007)।

इस तरह से पोल्ट्री क्षेत्र कुल मवेशियों की आबादी का एक बड़ा हिस्सा है और इसके कारण मवेशियों से प्राप्त कुल मूल्य का करीब 14 प्रतिशत हिस्सा पोल्ट्री का है। साउथ एशिया इंटरप्राइज डेवेलपमेंट फैसिलिटी के अनुसार पोल्ट्री उद्योग के बाज़ार का आकार सौ करोड़ डालर का है (रेहान, 2008)।

2. परिदृश्य

2.1 पोल्ट्री रोगों की व्यापकता

हालांकि बांग्लादेश में मुर्गी पालन बहुत ही लोकप्रिय है, किन्तु बीमारियों और शिकारियों के कारण पोल्ट्री में मृत्यु दर काफी अधिक है (30 से 40 प्रतिशत) और इस कारण से इनका पालन करने वाले लोग अपने उद्यम का पूर्ण लाभ नहीं उठा पाते हैं। सर्वाधिक व्याप्त पोल्ट्री रोग हैं - रानीखेत रोग, फॉल पॉक्स, फॉल कॉलेरा, फॉल टायफायड, कॉक्सीडियोसिस, संक्रामक बरसल रोग (गमबोरो), पोषक तत्वों की कमी से एवं कीड़े से होने वाली बीमारियां। इन बीमारियों के मद्देनज़र डी एल एस ने दो माह की उम्र तक मुर्गियों के बच्चों में रोग प्रतिरक्षण स्तर को बनाये रखने के लिये पहले सप्ताह तथा 21 दिन में रानीखेत रोग के टीके दिये जाने की सिफारिश की जाती हैं। डी एल एस ने एनडीवी के स्ट्रेन - जीवित मीजोजेनिक एम (मुक्तेश्वर) से रानीखेत बीमारी का टीका भी तैयार किया है जिसे 60 दिन पर मांसपेशियों में दिया जाता है और हर छह माह के अंतराल पर दिया जाता है (बेगम एवं अन्य 2006)। सरकार के अलावा कई निजी कंपनियां भी टीके बेचती हैं।

हालांकि, टीकों की उपलब्धता के मद्देनज़र बड़े, मध्यम और छोटे पैमाने के कुछ वाणिज्यिक पोल्ट्री फार्मों ने अपने टीकाकरण कार्यक्रम बनाये और स्वयं या पेशेवर पशु चिकित्सकों द्वारा पक्षियों का टीकाकरण किया। किन्तु स्वयं के टीकाकरण कार्यक्रम की कमी के कारण परम्परागत व्यवस्था एवं अर्द्धस्कैवेंजिंग प्रणाली से पाली जाने वाली मुर्गियों को अधिक संख्या में मरने का जोखिम उठाना पड़ा।

इस खाई को पाटने के लिये बांग्लादेश ग्रामीण विकास समिति (ब्राक) ने सरकार के सहयोग से पोल्ट्री टीकाकरण कार्यक्रम शुरू किया। इसका उद्देश्य टीकाकरण एवं पालकों को जानकारियों से अवगत कराकर पोल्ट्री को सामान्य बीमारियों के संपर्क में आने से बचाना था।

2.2 बांग्लादेश पोल्ट्री मॉडल

बांग्लादेश पोल्ट्री मॉडल (अनुबंध 2 में हितधारकों को देखें) शायद दुनिया में सबसे व्यापक रूप से ज्ञात पोल्ट्री आधारित विकास का अनुभव है। यह डीएलएस और विश्व खाद्य कार्यक्रम की खाद्य सहायता परियोजना के एक संयुक्त उद्यम से विकसित हुआ। वर्ष 1983-1986 के दौरान बी आर ए सी ने इस पहल में शामिल होते हुये सबसे पहले मुर्गी मॉडल के लिए ऋण सहायता प्रदान की और बाद में इसने सहयोग को और बढ़ाया।

इस मॉडल में तकनीकी प्रशिक्षण के सम्पूर्ण पैकेज, ऋण और बाजार संपर्क और महिला नेतृत्व वाले निर्धनतम परिवारों को लक्ष्य करते हुये घर के पिछवाड़े में कुक्कुट पालन को बढ़ावा दिया जाना शामिल है। इसने निर्धन परिवारों (आधा एकड़ या उससे कम जमीन के मालिक) को लक्ष्य किया और उन्हें ग्रामीण समूहों में संगठित किया, निवेशसेवायें प्रदान की, उत्पादन सहयोग दिया तथा पर्यवेक्षण एवं

निगरानी के जरिये कुक्कुट आधारित आजीविका का सृजन किया। इस व्यवस्था के हर घटक का उद्देश्य गरीब परिवारों की महिलाओं को संलग्न करना तथा उन्हें आवश्यक संगठनात्मक समर्थन देने के लिए प्रावधान बनाना था।

यह गुड प्रैक्टिस इस बात को उजागर करती है कि कैसे सरकार एवं गैर सरकारी संगठनो के अभिनव सहयोग से वैकल्पिक मवेशी स्वास्थ्य सुविधा आपूर्ति करके, स्वास्थ्य सेवा वितरण सीमाओं पर विजय प्राप्त की जा सकती है। यहां बांग्लादेश के हर जिले में पोल्ट्री टीकाकरण महिलाए, कुक्कुट पालकों के घर तक पहुंची तथा मृत्यु दर को कम करने में न केवल सफल हुई बल्कि पोल्ट्री स्वामित्व को बढ़ाने तथा आय वृद्धि में कामयाबी को चित्रित करने में भी कामयाब हुई। कुक्कुट टीकाकरण कमजोर महिलाओं के लिए एक सबसे व्यवहार्य रोजगार के विकल्प के रूप में उभरा। आज ये महिलाए न केवल समुदायों में सम्मानित हैं और कुशल एवं इज्जतदार टीका देने वाले हैंबल्कि कुक्कुट विस्तार की कार्यकर्ता भी हैं।

3. गुड प्रैक्टिस के प्रमुख तत्व

3.1 उत्पत्ति

इस पहल की शुरुआत के समय मानव बल की प्रत्यक्ष कमी तथा पहुंच का अभाव था क्योंकि हर उप जिले में केवल चार फील्ड कर्मचारी और एक पशुधन अधिकारी के साथ डीएलएस को करीब 200,000 कुक्कुटों और 50,000 पशुओं और भेड़ों को सेवायें उपलब्ध करवानी पड़ती थी। 300 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र के उप जिला में करीब 40,000 परिवार रहते हैं और हर घर में करीब पांच कुक्कुट पाले जाते हैं। वास्तविकता यह थी कि यह विभाग 10 किलोमीटर के दायरे से परे अपनी सेवायें देने में असमर्थ था (रहमान, 2003)। चूंकि सरकारी कर्मचारियों के लिये सभी पक्षियों को आवश्यक टीकाकरण सेवायें मुहैया कराना असंभव था, ऐसे में लोगों को कुक्कुट टीकाकरण कार्यकर्ता के तौर पर तैयार करना आवश्यक था। इस तरह से ब्राक ने स्थानीय क्षमताओं के निर्माण पर आधारित विकेन्द्रीकृत सेवा आपूर्ति मॉडल की संभाव्यता का परीक्षण करने के लिये 1985 में माणिकगंज जिला में प्रथम पोल्ट्री टीकाकरण पायलट कार्यक्रम शुरू किया। पायलट परियोजना की सफलता ने बांग्लादेश के 49 जिलों में इसे दोहराये जाने को सुनिश्चित किया। (अनुच्छेद 3 में जिला वार वैक्सीनेटरों की तैनाती को देखें)। इसके साथ ही साथ कुक्कुट टीकाकरण कार्यक्रम के बारे में जागरूकता कायम करने के लिये सरकार अपने संसाधनों एवं प्राद्यौगिकी तथा गैर सरकारी संगठन-ब्राक अपने नेटवर्क एवं अपनी पहुंच के साथ सामने आये।

पोल्ट्री वैक्सीनेटर कार्यक्रम का सम्पूर्ण लक्ष्य, सशक्तिकरण, अपनी आमदनी बढ़ाने को इच्छुक ग्रामीण महिलाओं के प्रशिक्षण, तथा इस कार्यक्रम के माध्यम से रोजगार के जरिये पोल्ट्री क्षेत्र में सेवा आपूर्ति व्यवस्था को मजबूत करना है। इसके पूरक लक्ष्य इस प्रकार हैं -

1. नियमित टीकाकरण के जरिये पोल्ट्री को सामान्य बीमारियों से बचाना ताकि मृत्यु दर कम किया जा सके।
2. पोल्ट्री संबद्ध गतिविधियों में स्व रोजगार में विशेषज्ञता को सुधारते हुये ग्रामीण गरीबों की गरीबी को कम करना।
3. एवियन फ्लू जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर जानकारियों का प्रसार।

कुक्कुट पालकों को पशु चिकित्सा सेवायें उनके घर पर देने के लिये ब्राक ग्राम संगठनों के महिला सदस्यों के बीच से पोल्ट्री वैक्सीनेटरों का चयन किया गया। इन महिलाओं को टीकाकरण सेवा, विस्तार कार्य, तकनीकी सलाह और समुदाय में कुक्कुट पक्षियों को कुछ बुनियादी उपचार मुहैया कराने के लिये प्रशिक्षित किया गया। समुदाय के सभी परिवार बहुत कम शुल्क पर पोल्ट्री वैक्सीनेटरों की सेवायें ले सकते हैं।

हालांकि इस मॉडल के पुनरावलोकन करने पर यह आसान लग सकता है लेकिन ब्राक के साथ लंबे समय से काम कर रहे वरिष्ठ कर्मचारी डा. मोहम्मद डी जे हुसैन से यह जाना जा सकता है कि पशु

चिकित्सकों को आरंभ में बहुत ही संशय था। पायलट चरण के आशाजनक परिणामों[2] ने इन पशु चिकित्सकों को उनके उलझनों से निकाला।

बॉक्स – 2: विकास को उनके खुद के हाथों में सौंपे

-डा. मोहम्मद दीवान जहिद हुसैन वैक्सीनेटर यात्रा को स्मरण करते हुये

जब मैंने महिलाओं को समूह बनाकर जमीन पर बैठकर अपने प्रशिक्षण शुरू होने का इंतजार करते हुये देखा, मैं विस्मित था। उनके चेहरे ढके हुये थे और मैं यह सोच कर आश्चर्य चकित हो रहा था कि इन्हें टीकाकरण, बीमारियों एवं प्राथमिक उपचार जैसे तकनीकी विषयों के बारे में कैसे प्रशिक्षित किया जा सकेगा। मैं इस कार्यक्रम की सफलता को लेकर काफी संदेह में था। आज जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूं तो मैं स्वीकार करता हूं कि मैं गलत साबित हो गया। ये अर्द्ध साक्षर महिलायें एहतियाती एवं उपचारात्मक पॉल्ट्री चिकित्सा के न सिर्फ बुनियादी पहलुओं के बारे में सीख गयीं बल्कि इन्होंने स्वच्छता और महिला स्वास्थ्य शिक्षा के बारे में सीखने में भी दिलचस्पी दिखायी। आज ये महिलायें हमारे संगठन की अत्यंत महत्वपूर्ण सदस्य हैं जिनके प्रयासों के कारण समुदाय में पॉल्ट्री की मृत्यु दर तथा रोगों दोनों में कमी आयी है।

चयन की प्रणाली भी विकेन्द्रीकृत है जहां वीओ उन सदस्यों के नाम बताते हैं जो वैक्सीनेटर के पद के लिये सबसे उचित हैं। इन नामों पर वी ओ की बैठक में विचार किया जाता है और सबसे सुयोग्य उम्मीद पर सहमति बनती है। विधवाओं, निराश्रितों, 25 से 45 साल के उम्र की विवाहित महिलाओं, जो छोटे परिवार की हैं तथा जो गांव की स्थायी निवासी हैं,

बाक्स 3: पॉल्ट्री वैक्सीनेटर के सपने में जीवित मलेका बेगम करीब 28 साल पहले बीआरएसी के संपर्क में आयी थी। उस समय वह युवा गृहणी थी जो अपनी आजीविका के लिये संघर्ष कर रही थी, क्योंकि उसके पति का वेतन इतना पर्याप्त नहीं था कि सात लोगों के परिवार का भरण-पोषण हो पाता। वह अतिरिक्त आमदनी के लिये बांस के बाड़ बनाने का काम करती थी। मलेका बीआरएसी के वयस्क शिक्षा की कक्षाओं में जाने लगी जिससे उसे बीआरएसी की गतिविधियों के बारे में आधिक जानकारियां हासिल हुयी।

मलेका ने अपने पति की इच्छा के विरुद्ध पॉल्ट्री वैक्सीनेटर के रूप में प्रशिक्षण हासिल किया और उसने अतिरिक्त तौर पर कुक्कुटों का पालन भी शुरू कर दिया। तब से वह अपने गांव में और गांव के आसपास महिला कृषकों को पशु चिकित्सा सेवायें उपलब्ध करा रहीं है। उस पर 300 से 400 घरों के मवेशियों की देखभाल की जिम्मेदारी है। वह प्रति टीका के लिये एक टका लेती है। वह अब प्रति माह 1,000 से 1,200 टका अर्जित करती है। उसके पति ने भी उसके काम को स्वीकार किया और उस पर वह गर्व करते हैं। वह अपनी बचत की मदद से एक गाय खरीदने में सफल हो गयी और वह अपने दामाद को रोजगार की खोज के लिये लीबिया भेज रही है।

[2] अनुबंध 7 पोल्ट्री वैक्सीनेटर कार्यक्रम शुरू करने के एक वर्ष के भीतर प्राप्त प्रभाव दिखाता है

जिनकी सामाजिक स्वीकार्यता है एवं जिनके पास प्रेरित करने की क्षमता है, उन्हें इस पद के लिये प्रथम प्राथमिकता दी जाती है। अविवाहित लड़कियां शादी के बाद अपने माता-पिता के घर को छोड़ देती हैं और इसलिये इस पद के लिये उनके नाम पर विचार नहीं किया जाता है। जिन महिलाओं के पास पढ़ने-लिखने की काबिलियत है उन्हें भी इस पद के लिए वरीयता दी जाती है ताकि वे टीकाकरण, रोगों तथा जैव सुरक्षा से संबंधित तकनीकी पहलुओं के बारे में सीख सकें। महिलाओं के इस वर्ग के चयन करने के लिये किये जाने वाले अथक प्रयासों के कारण उन्हें सामाजिक प्रतिरोध पर विजय पाने तथा आर्थिक तौर पर मजबूत पेशेवर एवं कुशल उद्यमी बनने के मौका मिलता हैं।

दिलचस्प बात यह है कि पहले जब ब्राक पुरुष वैक्सीनेटरों के साथ काम करता था, अधिक वेतन वाले रोजगारों की तलाश के कारण उनकी संख्या घट जाती थी। इसके कारण केवल महिलाओं को ही प्रशिक्षित करने का फैसला किया गया। पुरुष वैक्सीनेटरों को लेकर अन्य एजेंसियों का भी इसी तरह का अनुभव है जहां उनके काम छोड़ने का प्रतिशत 80 तक पहुंच गया। हालांकि आज भी प्रोत्साहन, गहरी निगरानी और प्रदर्शनों की मानिटरिंग के बावजूद विस्थापन, सामाजिक कारणों तथा आर्थिक उन्नयन के कारण हर साल औसतन 2.5 प्रतिशत महिलायें काम छोड़ती हैं।

तालिका 4: 2004 से 2008 की अवधि के लिये पोल्ट्री वैक्सीनेटरों के काम छोड़ने की दर

विवरण	2004	2005	2006	2007	2008
नव चयनित	576	547	1,347	1,650	1,063
छोड़ने की दर	495	427	447	471	463
पोल्ट्री वैक्सीनेटरों की संख्या	17,100	17,220	18,120	19,299	19,899
छोड़ने की दर (प्रतिशत)	2.9	2.5	2.6	2.6	2.4

पोल्ट्री वैक्सीनेटरों को ब्राक कार्यालय में कुक्कुट रोगों के नियंत्रण, बुनियादी उपचार, रोकथाम एवं प्रबंधन के बारे में कुक्कुट टीकाकरण पर पांच दिन का गैर आवासीय प्रेरण प्रशिक्षण दिया जाता है। (अनुबंध 4 में मॉड्यूल देखें)। हालांकि प्रशिक्षण तकनीकी है और इसमें प्रदर्शनों, परीक्षणों और क्षेत्रीय दौरों के साथ गहरा व्यवहारिक घटक शामिल है। यह भागीदारी से युक्त है तथा इसे अशिक्षित एवं अर्द्ध शिक्षितो के लिये बनाया गया है और ब्राक तथा डीएलएस कर्मचारी के जरिये यह प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रशिक्षण पूरा होने के बाद पोल्ट्री वैक्सीनेटरों को निःशुल्क स्टार्टर किट दिया जाता है जिसमें एक बैग, थर्मस, दस्ताने और डिस्पोजेबल प्लास्टिक सिरिंज होते हैं। ब्राक के जरिये डीएलएस के द्वारा हर सप्ताह टीकों का वितरण होता है और वैक्सीनेटरों को वितरण तिथियों के बारे में पहले ही सूचित कर दिया जाता है। टीकों को ढाका के मोहाखाली स्थित उत्पादन स्थल से दूरदराज के वितरण स्थलों तक ले जाने के दौरान इन्हें खराब होने से बचाने के लिये कोल्ड चेन को सुनिश्चित किया जाना प्रथम प्राथमिकता होती है ताकि वैक्सीन अधिकाधिक कारगर हो।

पुनश्चर्या प्रशिक्षण भी हर महीने आयोजित होते हैं और ये वैक्सीनेटरों तथा ब्राक के क्षेत्रीय अधिकारियों के बीच अनुभवों को साझा करने के महत्वपूर्ण इंटरफ़ेस का काम करते हैं और जैव सुरक्षा के बारे में जागरूकता कायम करने तथा प्रसार उपकरणों[3] के ज्ञान जैसे उभरते मुद्दों के समाधान के लिये मंच तैयार करते है।

इन पुनश्चर्या कार्यक्रमों में उपस्थिति दर 90 प्रतिशत से अधिक होती है। पोल्ट्री प्रशिक्षण के कार्यक्रम का विकास तथा सहायता के तौर- तरीके सतत् प्रक्रिया हैं जो अनेक वर्षों के अनुभवों एवं लाभार्थियों एवं क्षेत्रीय कर्मचारियों की प्रतिक्रियाओं पर आधारित है। एक वैक्सीनेटर को तैयार करने के लिये समावेशी प्रशिक्षण, तकनीकी सहायता तथा आरंभिक निवेश के तौर पर स्टार्टर के पैकेज की जरूरत होती है। एक वैक्सीनेटर के प्रशिक्षण पर होने वाला कुल खर्च 750 टका है जिसमें उन खर्चों को शामिल नहीं किया गया है जो पुनश्चर्या पाठयक्रमों के संचालन में लगता है।

आखिरकार हालांकि वैक्सीनेटरों को किसी प्रशिक्षण के अंत में प्रमाणपत्र नहीं दिया जाता है, लेकिन इस प्रक्रिया को बांग्लादेश की सरकार का समर्थन प्राप्त है। पशु रोग संगरोध अधिनियम, 2003 के अनुच्छेद 21 के जरिये वैक्सीनेटरों की स्थिति को परिलक्षित किया गया है जिसके तहत उन्हें टीकाकरण तथा पशुओं/पक्षियों के बुनियादी उपचार की अनुमति दी गयी है। हालांकि ये किसी पंजीकृत पशु चिकित्सक की प्रत्यक्ष निगरानी में ही पशुओं/पक्षियों का उपचार कर सकते हैं। (अनुच्छेद 5 में अधिनियम के विवरण देखें)

जब कोई वैक्सीनेटर आवश्यक प्रशिक्षण हासिल कर लेती है तब उसे विशेष गांवों/समूहों की जिम्मेदारी दी जाती है। वह हर सप्ताह निर्धारित मूल्य पर ब्राक कार्यालय से टीके प्राप्त करती है और निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार इन्हें लगाती है। (अनुच्छेद 6 में कार्यक्रम देखें)। टीकाकरण के दौरान टीकों को पतला करने के लिये आसुत जल का इस्तेमाल करना अनिवार्य है। इसके अलावा सभी टीकों को उन्हें पुनर्गठित किये जाने के 30 मिनट के भीतर लगाया जाता है। जीवित विषाणुओं के जरिये पर्यावरण की मिलावट को कम करने के लिये फर्श पर कागज की एक परत बिछाई जाती है। टीकाकरण के बाद शीशियों एवं अन्य प्रयुक्त सामग्रियों का समुचित निबटान किया जाता है और टीकाकरण के सभी चरणों में रिकार्ड दर्ज किया जाना आवश्यक है। पोल्ट्री वैक्सीनेटर अपनी जिम्मेदारियों के तहत् उपजिला पशुधन अधिकारियों के साथ निकट का संपर्क रखते हैं ताकि टीकाकरण के बारे में प्रतिक्रियायें, टीकों के इस्तेमाल के बारे में उन्हें अवगत कराया जा सके तथा कुक्कुट से संबंधित मुद्दों के बारे में सलाह ली जा सके। किसी कुक्कुट के किसी कारण के बगैर मौत हो जाने पर पोल्ट्री वैक्सीनेटर मृत या बीमार पक्षियों को या तो ब्राक लैब या सरकारी पशु चिकित्सा अस्पताल भी लाते हैं। ब्राक क्षेत्र अधिकारी नियमित रूप

[3] नियमित अंतराल पर विस्तार के एक नए पहलू को लिया जाता है - कैसे एक पोस्टर का उपयोग किया जा सकता है या एक समूह की बैठक का आयोजन कैसे किया जाए, या एक प्रदर्शन की तैयारी कैसे की जाए, आदि

से टीकाकरण संबंधी रेकार्डों, टीकाकरण के प्रभावों, बीमारियों के फैलने, कुक्कुटों की मौत तथा संबंधित कारणों पर सतत् निगरानी रखते हैं।

कुक्कुटों का टीकाकरण करने के अलावा वैक्सीनेटर प्रसार कार्य भी करते हैं जिसके तहत् कुक्कुट पालकों को पर्याप्त गर्मी और वायु निकास की व्यवस्था करने, बेहतर गुणवत्ता के आहार एवं पानी देने, समुचित औषधियों के इस्तेमाल, मृत पक्षियों के कारगर तरीके से निबटारे और खाद और कूड़े-करकट को गहराई में दबाने जैसे पालन-पोषण के बेहतर तौर-तरीकों का पालन करने की सलाह दी जाती है। इस तरह से कुक्कुट वैक्सीनेटर ब्राक, डीएलएस में उपलब्ध प्रौद्योगिकियों तथा गरीब कुक्कुट पालकों के बीच ज्ञान की खाई को पाटने में अत्यंत महत्वूपर्ण भूमिका निभाते हैं। कुक्कुट वैक्सीनेटरों के न्यनूतम कार्यों तथा संबंधित लक्ष्यों को तालिका 5 में दर्शाया गया है।

तालिका 5: पोल्ट्री वैक्सीनेटरों के कार्य एवं लक्ष्य	
कार्य	**लक्ष्य**
सुबह आठ बजे से पहले कुक्कटों को टीका देना .	प्रतिमाह 500 से अधिक पक्षियों का टीकाकरण करना
बीआरसीए कार्यालय से टीका हासिल करना	प्रोटोकॉल बरकरार रखना
मासिक पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में शामिल होना	ज्ञान में बढ़ोतरी करना तथा फील्ड अनुभवों के बारे में विचार-विमर्श करना
कोल्ड चेन को बनाये रखना	मानक स्वरूप के अनुसार
टीकों एवं दवाइयों की मांग रखना	निर्धारित सरल फार्मेट में
रोकथाम तथा उपचारात्मक बुनियादी स्वास्थ्य सेवायें उपलब्ध करना.	हर माह कम से कम 150 टका की दवाइयों की बिक्री करना
कठिनाईयों के बारे में जानकारी देना और सहायता प्राप्त करना	असमान्य मौतों की खबर तत्काल देना
इन गतिविधियों के लिये बेहतर आय अर्जित करना	हर माह 500 टका अर्जित करना

इसके अलावा जब से देश में बर्ड फ्लू को प्रकोप शुरू हुआ है तब से कुक्कुट वैक्सीनेटरों की भूमिका को और भी महत्व मिलने लगा है। विभिन्न गैर सरकारी संगठनों तथा डीएलएस के साथ समावेशी गतिविधियों के बैनर तले वैक्सीनेटरों ने रुग्ण पक्षियों के बारे में भारी कौशल हासिल कर लिया है तथा ये लोगों के साथ काम करते हुये बर्ड फ्लू फैलने पर क्या कदम उठाने चाहिये इससे भी वे अवगत हैं। वैक्सीनेटर कुक्कुट पालकों के साथ अपने संबंधों के जरिये नियमित रूप से निगरानी रखने का भी काम करते हैं (रहमान, 2008)। और इस तरह से वे महत्वपूर्ण सूचना प्रदाता का भी काम करते हैं। बर्ड फ्लू की महामारी वाले क्षेत्रों में कुक्कुट वैक्सीनेटर सामुदायिक स्तर पर अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

बॉक्स 4: पॉल्ट्री वैक्सीनेटर बर्ड फ्लू के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करते हैं

- बर्ड फ्लू से संबंधित जानकारी
- बर्ड फ्लू के खतरनाक प्रभाव/महत्व
- यह कैसा फैलता है
- प्रवासी पक्षियों की भूमिका
- गीले बाजार की भूमिका
- व्यक्तिगत स्वच्छता के लिये किये जाने वाले उपाय
- स्वच्छता/निबटान प्रक्रिया
- मनुष्यों के लिये निवारणकारी दवाइयां और पक्षियों के लिये टीके

बर्ड फ्लू की महामारी फैलने के बाद क्या करना चाहिये और क्या नहीं करना चाहिये

- सुरक्षात्मक उपाय किये बगैर बीमार पक्षियों को न तो छुयें और न ही उठायें।
- पक्षियों को उठाने के बाद हमेशा अपने हाथ पानी और साबुन से साफ करें।
- खाने से पहले मुर्गियों के मांस और अंडे को पकायें। मुर्गियों के कच्चे उत्पादों को नहीं खाना चाहिये।
- पक्षियों की असामान्य मौतों की सूचना स्थानीय अधिकारियों को दें।
- मृत पक्षियों का निबटारा (जमीन में दबाने) करने के दौरान एहतियात बर ती जानी चाहिये/समुचित तरीके से निपटान करें।
- रानीखेत (न्यू कैसल) रोग का टीकाकरण सुनिश्चित करें ताकि एवियन फ्लू के लक्षणों के बारे में भ्रम को कम किया जा सके।
- जंगली पक्षियों एवं उनके गोबर से सभी पक्षियों को यथा संभव अलग रखना चाहिये।
- पास के जलाशयों में बतखों को तैरने नहीं देना चाहिये तथा उन्हें सुरक्षित रखना चाहिये।
- बत्तखों और मुर्गियों को अलग-अलग रखना चाहिये।

i. समुचित जैव सुरक्षा उपायों को बढ़ावा देने में
ii. रोग के बारे में सम्पूर्ण जागरूकता कायम करने में
iii. संदिग्ध मामलों की समय पर जानकारी देने में
iv. बीमारी फैलने पर समन्वय की भूमिका निभाने में

3.2 संरचना एवं शामिल लोग

यह गुड प्रैक्टिस द्विपक्षीय एवं बहुपक्षीय दानदाताओं के सहयोग से पशुधन सेवा विभाग (डीएलएस) और बी आर ए सी और साथ ही साथ अन्य गैर सरकारी संगठनों द्वारा 1,970 के दशक में शुरू किये गये अर्द्धस्कैवेंजिंग कुक्कुट कार्यक्रम से विकसित हुआ । इस कार्यक्रम का उद्देश्य पोल्ट्री को भूमिहीन महिलाओं के बीच गरीबी हटाने के माध्यम के रूप में इस्तेमाल करना था। इसके क्रियान्वयन और समस्याओं को अवसर के रूप में बदल कर, पूर्व कार्यक्रम प्रसिद्ध बांग्लादेश पोल्ट्री मॉडल के रूप में

विकसित हुआ। उत्पादन, आपूर्ति और सेवाओं की इस पोल्ट्री प्रणाली की सामान्य विशेषता यह है कि सेवाओं की जरूरतों तथा जानकारियों को लोगों के लिये अवसरों के रूप में परिवर्तित किया जाता है। (डोलबर्ग, एफ. 2004)

ब्राक ने आज निजी कंपनियों एवं अनुसंधान संस्थानों सहित इन सभी हित धारकों के साथ बेहतर कामकाजी संबंध स्थापित किया है। डीएलएस ने अपनी तरफ से गैर सरकारी / स्वयं सेवी संगठनों के साथ हाथ मिलाकर उनके साथ कदम से कदम मिलाकर काम करते हुये सीमाओं पर से विजय पायी और एक दूसरे की ताकत का इस्तेमाल करते हुये अपनी पहुंच एवं प्रभाव में इजाफा किया। चित्र 1 में गुड प्रैक्टिस में शामिल विभिन्न अभिकर्ताओं के बीच के संबंध तथा इस सहयोग से हासिल होने वाले लाभों को प्रदर्शित किया गया है।

चित्र 1 - गुड प्रैक्टिस में शामिल विभिन्न अभिकर्ताओं के बीच के संबंध

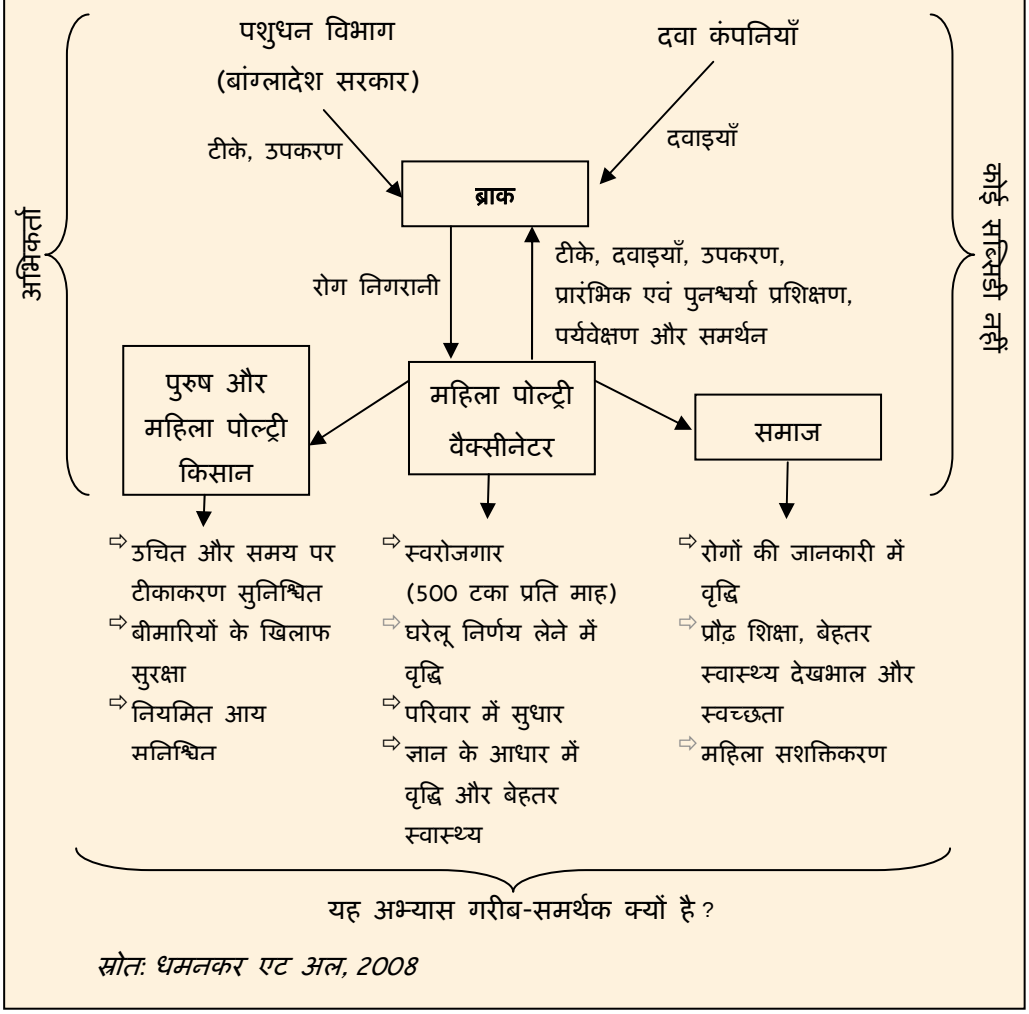

स्रोत: धमनकर एट अल, 2008

चित्र 2 - टीकों के लिये आपूर्ति श्रंखला

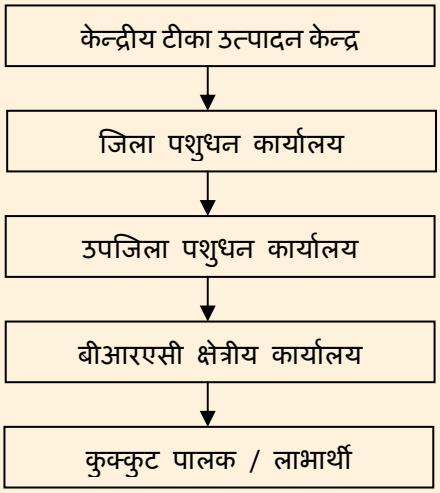

यह भागीदारी हर सक्रिय हित धारक की तरफ से स्पष्ट भूमिका के आधार पर काम करती है। ब्राक ने अपने आधार पर पशुचिकित्सा के लिये दवाइयां, पोल्ट्री वैक्सीनेटरों के लिये उपकरण एवं टको जैसे महत्वपूर्ण साधन उपलब्ध कराये हैं। ये सरकार से या निजी क्षेत्र से हासिल किये जाते हैं और ब्राक के क्षेत्रीय अधिकारी के जरिये लागत आधार पर इनकी आपूर्ति की जाती है। ब्राक नियमित प्रशिक्षण, निगरानी और वैक्सीनेटरों को परामर्श संबंधी सलाह भी उपलब्ध कराता है। इसकी पोल्ट्री संबंधी गतिविधियां श्रृंखलाबद्ध पिरामिड में संचालित होती हैं और ये ढाका स्थित ब्राक के मुख्यालय से लेकर क्षेत्रीय कार्यालयों तथा क्षेत्रीय एवं शाखा कार्यालयों के व्यापक नेटवर्क के जरिये संचालित होती हैं। शाखा कार्यालय के स्तर पर ब्राक कर्मचारी ग्रामीण संगठनों के साथ सीधे मिलकर काम करते हैं। हर शाखा कार्यालय में परम्परागत रूप से 100-120 वीओ कार्य करते हैं (करीब 3,000 महिलायें हैं, जिनमें से 60 प्रतिशत पोल्ट्री कार्यक्रम में शामिल हैं)। इस कार्यक्रम को संचालित करने के लिये एक कार्यक्रम सहायक को 40 पोल्ट्री वैक्सीनेटरों की जिम्मेदारी दी गयी है और इन्हें हर माह 3,000 टका दिया जाता है। कुछ मामलों में कार्यक्रम संचालक को दो छोटे उप जिलों की जिम्मेदारी भी दी जा सकती है और उसे प्रति माह 5,000 टका दिया जाता है। उस पर कार्यक्रम बनाने, पुनश्चर्या प्रशिक्षण आयोजित करने, टीके बांटने, निगरानी रखने, पोल्ट्री वैक्सीनेटरों को तकनीकी सहायता उपलब्ध कराने, रिकार्ड रखने तथा उच्च अधिकारियों को प्रगति की सूचना देने की जिम्मेदारी है।

इसके अलावा, टीकाकरण का यह कार्य महिला पोल्ट्री वैक्सीनेटरों के लिये भी अनुकूल हैं क्योंकि इस पेशे में आमदनी अर्जित होती है और यह जानकार ग्रामीणों एवं पड़ोसियों के साथ मिलकर किया जाने वाला अंशकालिक काम है (दो घंटे रोजाना)। गांवों में महिला वैक्सीनेटरों को प्राथमिकता दी जाती है क्योंक ज्यादातर कुक्कुट पालक महिलायें हैं और वे किसी अन्य महिला के सामने अधिक खुल कर बात कर सकती हैं। साथ ही साथ पोल्ट्री वैक्सीनेटरों को सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों की समझ होती है और

वे परम्पराओं का सम्मान करते हैं जिसके कारण ग्रामीण क्षेत्रों में उन्हें अपने काम करने में मदद मिलती है।

3.3 परिणाम एवं स्थिरता

यह मॉडल बांग्लादेश के दूरदराज के इलाकों में 24 लाख 70 हजार महिला पोल्ट्री पालकों तक पहुंचता है और यह पोल्ट्री में मृत्यु दर को घटाने तथा गरीबों की आमदनी को बढ़ाने में सफल रहा है। इसने ग्रामीण महिलाओं के लिये स्व रोजगार के मूल्यवान अवसर का सृजन किया है। आज ब्राक की 1,260 क्षेत्रीय शाखाओं के जरिये 19,900 वैक्सीनेटर अपनी सेवायें प्रदान कर रहे हैं। इस काम से बीमारियों के कारण कुक्कुटों की मौत और रुग्णता में कमी आयी है और इस तरह इस काम ने पोल्ट्री उप क्षेत्र को महत्वपूर्ण योगदान दिया है। शुरुआत के एक साल के भीतर पोल्ट्री मृत्यु दर में उल्लेखनीय कमी आयी है जो कि 21.3 प्रतिशत से घट कर 7.6 प्रतिशत हो गयी हैं और परिवार की वार्षिक औसत आमदनी में 400 टका से 2,919 टका तक की वृद्धि हुयी है । इससे प्रति वर्ष परिवारों में अंडे की खपत 43 से बढ़ कर 186 हो गयी हैं और मांस की खपत 1.6 से बढ़ कर 16.7 मुर्गी हो गयी हैं। अनुच्छेद 7 में इसके विस्तृत विवरण एवं प्रस्तुतीकरण प्रदर्शित हैं।

एक अन्य उपजिला में किये गये एक सर्वेक्षण से पता चलता है कि दो साल के भीतर पोल्ट्री मृत्यु दर 45 प्रतिशत से घट कर 25 प्रतिशत हो गयी है। (सालेक, 1993) ग्राफिक 1 में 1988 से 1997 की अवधि के बीच बांग्लादेश में पोल्ट्री मॉडल के विभिन्न हित धारकों की औसत आमदनी दिखायी गयी है।

ग्राफिक 1 - विभिन्न हितधारकों की औसत मासिक आय (टका) 1988 – 1997 अवधि के लिए

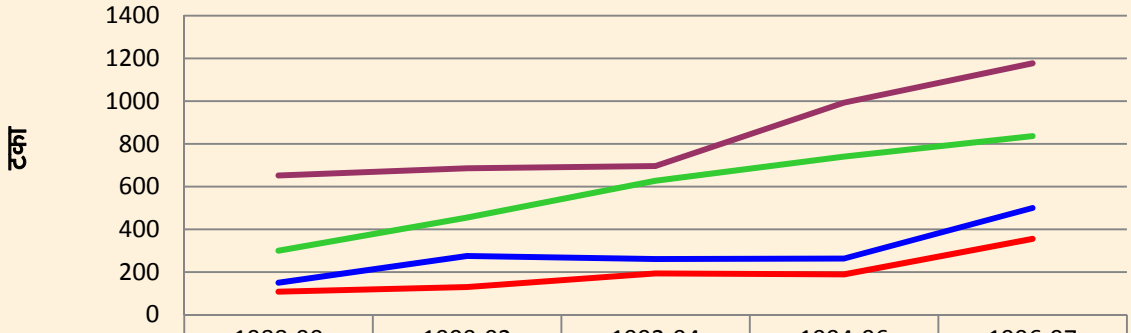

	1988-90	1990-92	1992-94	1994-96	1996-97
कुक्कुट (की) पालक	108	130	193	189	355
चूज़ा पालक	652	686	696	993	1,177
चारा विक्रेता	300	455	627	740	836
अंडा कलेक्टर	150	275	261	263	500

स्रोत: ब्राक, 1996

पोल्ट्री वैक्सीनेटर की ओर से किये जाने वाले प्रेरणादायी कार्य एवं प्रबंधन सहायता के कारण पोल्ट्री की मृत्यु दर में काफी कमी आयी तथा पोल्ट्री पालकों के ज्ञान एवं उनके ज्ञान में उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुयी है।

अंत में व्यक्तिगत तौर पर महिला वैक्सीनेटरों ने अपने परिवार की आमदनी को बढ़ाने में भी सहयोग किया और इस तरह से अपने जीवन स्तर में भी सुधार किया। हालांकि इनमें से कई वैक्सीनेटर आज भेंड़ों एवं बकरियों का टीकाकरण कर रहे हैं, ये लोग मवेशियों का टीकाकरण अभी तक नहीं करते हैं।

कुछ वैक्सीनेटरों के साथ हुयी बातचीत से पता चला है कि कुछ क्षेत्रों में इस काम से होने वाली आमदनी 300 टका और यहां तक की 400 टका तक होती है जबकि ग्राफिक 2 में 1990 से 2007 के बीच की अवधि के लिये वैक्सीनेटरों की मासिक आमदनी में तेज बढ़ोतरी प्रदर्शित होती है।

ग्राफिक 2 - पोल्ट्री वैक्सीनेटरों की औसत मासिक आय (टका प्रति माह)

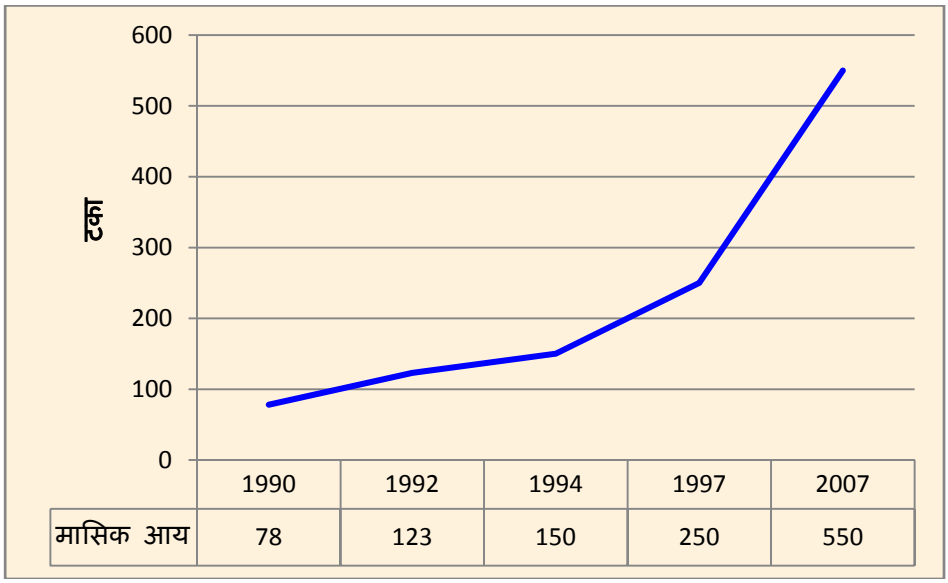

स्रोत: सालेक, 1999, 2007

तालिका 6 में लागत लाभ विश्लेषण दिखाया गया है।

तालिका 6: पॉल्ट्री वैक्सीनेटरों का लागत लाभ विश्लेषण				
विवरण	**लागत इकाई**	**गुणवत्ता**	**प्रति माह (टका)**	**कुल**
आय टीके का शुल्क दवाई की बिक्री से प्राप्त सीमांत लाभ	1	7 खुराक-शीशी अपव्यय X 90 खुराक*	630 150	
			मासिक आमदनी (टका)	780
लागत शीशी आसुत जल परिवहन	 20 10 20	 7 2 4	 140 20 80	
			लागत/मासिक (टका)	240
			कुल लाभ / मासिक (टका)	540
*10 खुराक - नाश				

इस कार्यक्रम से वैक्सीनेटरों को अपने ज्ञान के दायरे को बढ़ाने की भी प्रेरणा मिलती है और इन्होंने स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों, स्वच्छता, वयस्क शिक्षा, कानूनी जागरूकता, माइक्रो क्रेडिट योजनाओं आदि के बारे में भी अपने आप को शिक्षित किया है। ग्राम संगठनों के एक सदस्य होने के नाते पोल्ट्री वैक्सीनेटर सामाजिक मुद्दों (उदाहरण के तौर पर दहेज) पर अपनी चिंतायें व्यक्त करने में समर्थ हैं और परिवार एवं समुदाय में उनकी आवाज अधिक मजबूत होती है।

4. सीखे गये सबक और सफलता के मुख्य तत्व

I. सभी महत्वपूर्ण टीकों तथा कुक्कुट पालन से संबंधी संदेशों को शामिल करने वाले सामान्य पोल्ट्री स्वास्थ्य एवं प्रसारण सेवाओं के प्रावधानों की बदौलत घरों के पिछवाड़े में पाले जाने वाले कुक्कुटों तथा लघु स्तर पर पोल्ट्री पालन की व्यवस्था में पाले जाने वाले कुक्कुटों की मृत्यु दर में काफी कमी आयी है।

केन्द्रित समूह विचार विमर्श के दौरान पांच से दस साल के कार्यक्रम अनुभवों से पता चलता है कि मृत्यु दर को 15 प्रतिशत पर कायम रखा जा सकता है जबकि इस तरह की गतिविधियों से पहले मृत्यु दर 35 से 40 प्रतिशत के आसपास था। सेवाओं और साथ ही साथ टीकों की गुणवत्ता के आधार पर मृत्युदर को 7 प्रतिशत से भी नीचे लाया जा सकता है बशर्ते बर्ड फ्लू का प्रकोप नहीं फैले।

II. मृत्यु दर में उल्लेखनीय कमी से घर के पिछवाड़े और लघु पैमाने पर पाले जाने वाले कुक्कुटों की सम्पूर्ण उत्पादकता पर सकारात्मक असर पड़ता है। इससे अधिक मुर्गियों एवं अंडों की बिक्री एवं खपत होती है।

III. तकनीकी सहायता (रेफरल और साथ ही साथ मानिटरिंग) तथा सामान आपूर्ति (टीके, दवाइयां आदि) के संदर्भ में पर्याप्त संस्थागत सहयोग उपलब्ध होने पर गरीब अर्द्ध साक्षर महिलाओं को ग्रामीण इलाकों में सामान्य पोल्ट्री स्वास्थ्य एवं विस्तार सेवायें उपलब्ध कराने के लिये सफलतापूर्वक प्रशिक्षित किया जा सकता है। पोल्ट्री वैक्सीनेटरों का यह कैडर छोटे पोल्ट्री पालकों तथा सरकार एवं / अथवा गैर सरकारी संगठनों के पशुधन एवं पशुचिकित्सा कार्यकर्ताओं, जिनके काम के क्षेत्र बड़े और अधिक विस्तृत हैं, के बीच की खाई को पाटने में मददगार हो सकते हैं।

IV. पोल्ट्री वैक्सीनेटर होने से न केवल स्व रोजगार के मौके उपलब्ध होते हैं, इससे 500 टका (8 अमरीकी डालर[4]) की औसत मासिक आमदनी अर्जित होती है, बल्कि इस कार्य से जुड़ी महिलाओं को सामाजिक सम्मान, सशक्तिकरण, आत्म विश्वास एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति भी होती है। इसके अलावा महिलाओं के हाथ में पैसे होने से बच्चों को शिक्षा मिलती है और उन्हें बेहतर पोषण प्राप्त होता है।

V. घर के पिछवाड़े में मुर्गी पालने वाले और छोटे स्तर के पोल्ट्री पालक पशु चिकित्सा सेवाओं के लिये भुगतान करने के लिये भी तैयार रहते हैं बशर्ते कि उन्हें इस सेवा से लाभ प्राप्त हो। कुल 19,000 महिला पोल्ट्री वैक्सीनेटरों के साथ अर्जित 5 से 15 साल के अनुभवों के आधार पर कहा जा सकता है कि पोल्ट्री पालकों द्वारा वैक्सीनेटरों को भुगतान किये जाने के मामले में गंभीर कठिनाइयां सामने नहीं आयी हैं। कठिनाइयां उस समय आती हैं जब वैक्सीनेटर बहुत छोटे होते हैं और इस कारण उनका सम्मान नहीं होता है अथवा जब वैक्सीन की गुणवत्ता सही नहीं होती है। इन मामलों में सहायक एजेंसी का पर्याप्त सहयोग निर्णायक है।

[4] 2007 की मुद्रा दर – 1 अमरीकी डालर = 68 बांग्लादेशी टका

VI. वैक्सीनेटरों के सुचारू कामकाज के लिये समुचित चयन प्रक्रिया, गुणवत्तापूर्ण प्रेरक प्रशिक्षण (क्लास रूम और रोजगार के दौरान प्रशिक्षण) और मासिक पुनश्चर्या प्रशिक्षण इसकी पूर्व शर्तें हैं। विधवाओं, परित्यक्ताओं तथा शादीशुदा महिलायें सर्वश्रेष्ठ वैक्सीनेटर साबित होते हैं जिनमें लंबी समय अवधि तक (5 से 15 साल) काम को छोड़ने के मामले बहुत बिरले होते हैं। सामान्य तौर पर समुदाय महिला वैक्सीनेटरों को स्वीकार करता है और उन्हें अपने घरों में बेरोकटोक आने देता है।

VII. पोल्ट्री वैक्सीनेटरों के कुशल एवं कारगर कामकाज के लिये सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों तथा अन्य पशुधन कार्यकर्ताओं के बीच स्पष्ट कार्य विभाजन एवं बेहतर सहयोग की जरूरत होती है। पायलट अवधि के दौरान चलायी गयी योजना से भविष्य में सामने आने वाली समस्याओं से विजय पाने में मदद मिल सकती है (विश्वसनीय *कोल्ड चेन* प्रणाली, पुरुष वैक्सीनेटरों का लगातार काम छोड़ना) तथा विश्वास का एक संबंध स्थापित हो सकता है। परिणामस्वरूप सरकार की ओर से आज इस कार्यक्रम को पूरी तरह से समर्थन प्राप्त हो रहा है।

VIII. बर्ड फलू की महामारी से प्रभावित इलाकों में पोल्ट्री वैक्सीनेटर इन कामों में सामुदायिक स्तर पर निर्णायक भूमिका निभा सकते हैं – 1) समुचित जैव सुरक्षा उपायों को बढ़ावा देने में, 2) सम्पूर्ण जागरूकता कायम करने में, 3) संदिग्ध मामलों की समय पर जानकारी देने में और 4) महामारी फैलने पर समन्वय की भूमिका निभाने में। इनकी सफलता मुख्य तौर पर स्तरीय प्रशिक्षण एवं मार्गदर्शन, कुशल पशु चिकित्सकों/पशुधन कर्मचारियों तक आसानी से पहुंच के अलावा इस बात पर निर्भर करता है कि उनकी भूमिका का कितना सही तरीके से मूल्यांकन होता है और उन्हें न केवल पशु चिकित्सा पेशेवर बल्कि बर्ड फलू समस्या का समाधान चाहने वाले अन्य सभी अभिकर्ताओं द्वारा कितना महत्व मिलता है।

IX. ब्राक के अनुभव से पता चलता है कि पोल्ट्री वैक्सीनेटर शिक्षा, स्वच्छता, महिला स्वास्थ्य और दहेज उन्मूलन जैसे सामाजिक मसलों के बारे में सूचनाओं के प्रचार-प्रसार में निर्णायक भूमिका निभा सकते हैं।

X. छोटे इलाकों में टीका कार्यक्रम को भेंड़ों एवं बकरियों तक विस्तारित करने का पहला अनुभव सकारात्मक रहा। इसके कारण वैक्सीनेटर की मासिक आमदनी में बढोतरी हुयी जबकि भेंड़ों एवं बकरियों के पालकों, जिनमें से ज्यादातर महिलायें ही होती हैं, की स्वीकार्यता भी अधिक हुयी । मवेशियों के टीकाकरण के संबंध में पुरुष वैक्सीनेटरों को प्राथमिकता दी जाती है जो कि कृत्रिम गर्भाधार की सेवाएं प्रदान करते हैं।

5. प्रतिकृति की संभावना

यह गुड प्रैक्टिस कार्यकारी सरकार एवं गैर सरकारी संगठनों के बीच के सहयोग का प्रभावकारी प्रदर्शन है, जहां सरकार की संयुक्त शक्तियो, मिसाल के तौर पर प्रौद्योगिकी और प्राकृतिक एवं मानव संसाधनो की पहुंच से तथा गैर सरकारी संगठनों के नेटवर्क के इस्तेमाल से, बांग्लादेश के दूर-दराज के इलाकों में छोटे पोल्ट्री पालकों तक टीकाकरण एवं पोल्ट्री विस्तार सेवायें स्थायी एवं लागत प्रभावी तरीकों से उपलब्ध करायी गयी।

इस निर्णायक लिंक के सुचारू कार्यकलाप की सबसे महत्वपूर्ण शर्त है - वैक्सीनेटरों के कैडर एवं विस्तार कार्यकर्ताओं की स्वीकार्यता पशु चिकित्सक एवं पशु धन कार्यकर्ताओं की ओर से मिले । सिद्धांत रूप में इसका अभिप्राय यह है कि साधारण महिलाऐ भी साधनों से परिपूर्ण बनायी जाये जिससे कि वे बुनियादी कुक्कुट स्वास्थ्य सेवायें प्रदान कर सकें। इसलिये यह पहला एवं सबसे महत्वपूर्ण व्यावहारिक मुद्दा है जो मुख्य प्रतिरोधी ताकत के रूप में बनाया गया। एक बार इस प्रतिरोध पर विजय पा लेने पर कैडरों को तैयार करने एवं आगे-पीछे के गठबंधन को बनाने का आधार तैयार किया गया।

बुनियादी सेवायें उपलब्ध कराने के अलावा पोल्ट्री वैक्सीनेटर महामारी की स्थिति में निगरानी रखने के काम में सहायक बनते हुये महत्वपूर्ण सूत्र का काम करते हैं। मिसाल के तौर पर बर्ड फ्लू के दौरान वैक्सीनेटरों को विशेष प्रशिक्षण दिया जाता है ताकि वे पोल्ट्री पालकों को महामारी फैलने की स्थिति को रोकने तथा उस स्थिति में समुचित कदम उठाने के लिये तैयार कर सकें। इस प्रैक्टिस से एक निर्णायक तत्व यह उभर का सामने आ रहा कि मृत्यु दर को कम से कम करने के लिये सामूहिक टीकाकरण महत्वपूर्ण है। यहां टीकाकरण सेवाओं के लिये भुगतान व्यवस्था लागू करने, *कोल्ड चेन* प्रणाली के रखरखाव और उन्नत जैव-सुरक्षा जागरूकता, ये सभी इस मॉडल की सफलता एवं उसके स्थायित्व के लिये महत्वपूर्ण हैं।

एक और महत्वपूर्ण पहलू अपनायी गयी चयन प्रक्रिया है। इस चयन प्रक्रिया के *चलते* गरीबी घटाने तथा महिला सशक्तिकरण के ब्राक के समन्वित एजेंडे से आकर्षित होते हुये, विधवाओं, परित्यक्ताओं और विवाहित महिलाओं को चुनने के लिये अथक प्रयास किये जाते हैं क्योंकि वैक्सीनेटर महिलाओं को सामजिक प्रतिरोध पर विजय पाने तथा आर्थिक रूप से मजबूत पेशेवर एवं कुशल उद्यमी बनने के मौका प्रदान किया जा सके। यह जानना महत्वपूर्ण है कि गरीबी एवं सशक्तिकरण एजेंडा के अलावा, गांवों में रहने वाली इस श्रेणी की महिलाओं को सर्वश्रेष्ठ परिणाम देने में सक्षम पाया गया और इनमें काम छोड़ने की दर भी कम पायी गया।

ब्राक की ओर से किये गये हाल के अध्ययनों से पता चलता है कि महिला पोल्ट्री पालकों तथा वैक्सीनेटरों दोनों की आमदनी, पारिवारिक पोषण और साथ ही साथ इस पहल के जरिये सशक्तिकरण के

संदर्भ में बहुत अधिक लाभ पहुंचा। विशेष तौर पर पुनश्चर्या प्रशिक्षण एवं उद्यमिता कौशल (ब्राक की माइक्रो क्रेडिट स्कीम[5] के साथ संबंध) उल्लेखनीय तौर पर सक्रिय प्रैक्टिस में शामिल महिला वैक्सीनेटरों की आजीविका को प्रभावित करते हैं।

हालांकि पोल्ट्री स्वास्थ्य तथा विस्तार कार्यकर्ताओं के इस कैडर को कोई औपचारिक स्वीकार्यता नहीं है, इसलिये सरकार इनका अनुमोदन करती है और इसके परिणामस्वरूप अनेक हितधारक इस क्षेत्र में प्रगति कर रहे हैं। मौजूदा अनुमान है कि इस समय करीब 35 हजार कार्यकर्ता (ब्राक वैक्सीनेटर सहित) सक्रिय हैं। । इन कार्यकर्ताओं की ओर से उपलब्ध करायी जाने वाली सेवाओं तथा ब्राक के लिये काम करने वाली सहायक एजेंसियों की ओर से दिये जाने वाले सहयोग के बीच गहरा संबंध है क्योंकि सभी तौर-तरीकों को एक जगह रखा जाता है और इन कामों से जुड़े सभी कैडरों को संस्थागत किया जाता है।

[5] बीआरएसी अपने सभी क्षेत्र गतिविधियों को अपने माइक्रो क्रेडिट कार्यक्रमों से ऐसा लिंक करता है कि दोनों लाभार्थियों और सेवा प्रदाताओं बचत और ऋण और वित्तीय पहलुओं को समझ सकें।

6. निष्कर्ष

यह प्रक्रिया पुनरावृति की जाने लायक है क्योंकि यह ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाती है और वह सेवाओं के विक्रेता एवं क्रेता के रूप में ग्रामीण अर्थव्यवस्था में सक्रिय भागीदारी करती हैं। इसके अलावा इस प्रक्रिया के परिणाम के तौर पर इन्होंने सरकार के साथ गहरा संबंध स्थापित किया है और वे सरकार के साथ-साथ गैर सरकारी क्षेत्र की सेवाओं तक अपनी पहुंच बना सकती हैं। बांग्लादेश में, जहां गांवों में 20 से 30 प्रतिशत परिवारों में महिलायें ही मुखिया हैं और ऐसे में इस पहल का एक मुख्य पहलू यह है कि इसने आत्म प्रतिष्ठा को बढ़ावा दिया है जिसका स्पष्ट संबंध उस वित्तीय योगदान से है जो वे अपने परिवार के लिये करती हैं और इस कारण समाज में वे विशेष स्थिति प्राप्त करती हैं। पोल्ट्री वैक्सीनेटरों ने उन महिलाओं की क्षमता एवं उनके दर्जे को उठाने में उल्लेखनीय योगदान दिया है, जो अन्यथा कामकाजी क्षेत्र से बाहर हो जातीं हैं । इसके अलावा एवियन इंफ्लुएंजा के फैलने का खतरा आज पोल्ट्री क्षेत्र के लिये एक बड़ा खतरा है। हालांकि सरकार, गैर सरकारी संगठनों और निजी क्षेत्र ने अनेक कदम उठाये हैं, इन वैक्सीनेटरस ने जैव-सुरक्षा, निबटान प्रबंधन, खेतों की साफ-सफाई, कुक्कुट स्वास्थ्य, बीमारियों की जानकारी आदि के बारे में जागरूकता कायम करके कारगर तरीके से सहयोग दिया है।

इस मॉडल को आज और भी विस्तार दिया जा रहा है ताकि भेंड़ों एवं बकरियों को भी शामिल किया जाये। बांग्लादेश पशुधन नीति (2007) में कैडरों की भूमिका को स्वीकार किया जाता है। सार्वजनिक पशुचिकित्सा सेवाओं के कार्यकलापों (पशु रोग नियंत्रण) और वितरण (पशुचिकित्सा सार्वजनिक स्वास्थ्य एवं नियामक मामले) और निजी पशुचिकित्सा सेवा आपूर्ति (पशु स्वास्थ्य) के बीच अंतर करने के बाद पशुधन नीति ने पशु चिकित्सा सेवाओं के वितरण के विशेष दायरे को हासिल करने के लिये दूसरे विकल्प मे निम्नलिखित कार्यकलापों की सिफारिश की है।

1) सामुदायिक पशु स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के एक कैडर को शामिल किया जाना ।

2) समुदाय आधारित निजी कार्यकलापों की स्थापना को उत्प्रेरित करना एवं सहायता देना हालांकि वस्तुओं (टीके, दवाइयां, मुर्गियों के बच्चे) एवं सेवाओं की गुणवत्ता के नियंत्रण को सुनिश्चित करने के लिये संबंधित कानूनी एवं नियामक ढांचा अभी बनना बाकी है।

अनुबंध 1* - ग्राम आधारित कुक्कुट उत्पादन प्रणाली की रूपरेखा

विश्लेषणात्मक प्रयोजनों क लिये एफएओ** और ओआईई ने चार मुख्य पोल्ट्री उत्पादन प्रणालियों*** (सेक्टरों) की पहचान की है जिनमें सेक्टर 3 लघु पैमाने की वाणिज्यिक उत्पादन प्रणाली एवं सेक्टर 4 ग्रामीण अथवा घर के पिछवाड़े में कुक्कुट पालन प्रणाली आम तौर पर छोटे कुक्कुट उत्पादन व्यवस्था का प्रतिनिधित्व करती है। हालांकि बेसेई (1987)**** का परम्परागत पारिवारिक पोल्ट्री वर्गीकरण ज्यादा समुचित लगता है, यह देखा गया है कि एफएओ एवं ओआईई वर्गीकरण को दक्षिण एशिया सहित व्यापक क्षेत्रों में लागू किया जाता है।

सेक्टर 3 व्यावसायिक है लेकिन छोटे पैमाने की कुक्कुट उत्पादन प्रणाली है जो अंडे अथवा मांस अथवा दोनों का उत्पादन कर सकती है। पक्षियों को प्रजनन कंपनियों से खरीदा जाता है। उत्पादों को व्यावसायिक तौर पर बेचा जाता है। पक्षियों को निरंतर अंदर रखा जाता है। बांग्लादेश में 500 से कम पक्षियों वाली इकाईयों को इस श्रेणी में रखा जाता है।

घर के पिछवाड़े में कुक्कुट पालन की प्रणाली (सेक्टर 4) दक्षिण एशिया में सबसे अधिक व्यापक है और लाखों परिवारों में यह प्रणाली अपनायी जाती है। इनमें से ज्यादातर परिवार देश के निर्धनतम लोग होते हैं। मुख्य तौर पर महिलायें और बच्चे इन पक्षियों की रोजाना देखभाल करते हैं और आम तौर पर ये ही मालिक होते हैं और निर्णय लेने वाले होते हैं। इस व्यवस्था में पाले जाने वाले पक्षियों को व्याप्त कृषि प्रणाली के एक हिस्से के रूप में देखा जा सकता है जहां नस्लों का मिलान और उम्र वर्गीकरण बहुत ही सामान्य है। सेक्टर 4 को दो उप क्षेत्रों में बांटा जा सकता है – जिसे 4ए एवं 4बी नाम दिया जा सकता है।

---

* स्रोत – प्रमिन एट अल, 2007

** संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन (http://www.fao.org/ag/againfo/home/en/index.htm; http://www.fao.org/ag/againfor/programmes/en/pplpi/home.html;)
पशु स्वास्थ्य के लिए विश्व संगठन (www.oie.int) स्रोत – प्रमिन एट अल, 2007

*** सेक्टर 1 – औद्योगिक एकीकृत प्रणाली, सेक्टर 2 – वाणिज्यिक उत्पादन प्रणाली, सेक्टर 3 – छोटे पैमाने पर वाणिज्यिक उत्पादन प्रणाली, सेक्टर 4 – गांव या पिछवाड़े प्रणाली

**** बेसेई (1987) वर्गीकरण के अनुसार निम्नलिखित चार व्यापक उत्पादन प्रणाली इस प्रकार है –
फ्री रेंज एक्सटेंशन – पक्षियों ही सीमित नहीं हैं, भोजन के लिए एक व्यापक क्षेत्र पर मांजना
बैकर्याड एक्सटेनसिव – मुर्गियों को रात में मुर्गी-घर में रखा जाता है, दिन में मुर्गियां खुले क्षेत्र में घूमतीं हैं, आमतौर पर सुबह और शाम को थोड़ा अनाज खिलाया जाता है।
सेमी इनटेनसिव – यह व्यापक और गहन सिस्टम का एक संयोजन है जहां पक्षियाँ एक निश्चित क्षेत्र तक ही सीमित रहती हैं तथा उनके लिए आश्रय भी उपलब्ध है। फ़ीड और पानी आश्रय - मुर्गी-घर में उपलब्ध किया जाता है ताकि बारिश, हवा तथा जंगली जानवरों के नुक़सान से बचा रहे।
इनटेनसिव – यह प्रणाली का उपयोग मध्यम और बड़े-पैमाने की वाणिज्यिक उद्यमों करती हैं तथा घरेलू स्तर पर भी इसका इस्तेमाल किया जाता है। पक्षियों को पूरी तरह से मुर्गी-घर या पिंजरों में सीमित रखा जाता है। डीप लिटर प्रणाली, सलेटिड फ़लोर प्रणाली, बैटरी केज प्रणाली।

सेक्टर 4ए की विशेषता यह है कि यह बहुत ही बुनियादी प्रणाली है जिसमें देशी कुक्कुटों को पाला जाता है और जहां क्रॉस ब्रीडिंग नहीं है। इसमें अंडे के उत्पादन के बजाय मांस उत्पादन होता है और मिश्रित कृषि प्रणाली का यह हिस्सा है। इसे अक्सर घर के पिछवाड़े में कुक्कुट पालन की परम्परागत व्यवस्था के रूप में भी वर्णित किया जाता है।

सेक्टर 4बी की विशेषता यह है कि इसमें सुधरे हुये नस्ल के कुक्कुटों का पालन किया जाता है, जहां थोड़ा अधिक सुधरा हुआ प्रबंधन होता है तथा टीकाकरण और अन्य निवेश जैसी अतिरिक्त सुविधायें लगायी जाती है।
परिदृश्य 1 सेक्टर 3, 4ए एवं 4बी के मुख्य विशेषताओं के संक्षिप्त विवरण हैं।

परिदृश्य 1 - ग्राम आधारित कुक्कुट उत्पादन प्रणालियां

सेक्टर 4ए: परम्परागत मुक्त क्षेत्र (1-10 पक्षी) निम्न इनपुट/ निम्न आउटपुट	**सेक्टर 4बी: उन्नत मुक्त क्षेत्र (5-10 पक्षी) निम्न इनपुट/मध्यम आउटपुट**	**सेक्टर 3: लघु-स्तरीय सीमित पालन (50 से 200 पक्षी) उच्च इनपुट/उच्च आउट पुट**
⇨ बहुसंख्यक ग्रामीण परिवार	⇨ मध्यम संख्यक ग्रामीण परिवार	⇨ कम ग्रामीण परिवार
⇨ ज्यादातर महिलाओं द्वारा संचालित	⇨ महिलाओं और परिवार द्वारा संचालित	⇨ व्यापारी, महिलायें
⇨ घरेलू खपत	⇨ घरेलू खपत तथा स्थानीय बाजार में बिक्री	
⇨ लघु नगदी आमदनी	⇨ पारिवारिक आमदनी	⇨ व्यावसायिक आमदनी
⇨ सामाजिक एवं सांस्कृतिक महत्व (सौगात, धार्मिक)	⇨ सामाजिक महत्व	⇨ कम सामाजिक महत्व
	⇨ माइक्रो क्रेडिट	⇨ क्रेडिट आधारित परिसम्पत्ति
⇨ देशी नस्ल	⇨ देशी नस्ल/उन्नत नस्ल	⇨ संकर नस्ल (ब्रायलर्स अथवा लेयर्स)
⇨ उच्च मृत्यु दर	⇨ मध्यम मृत्यु दर	⇨ कम मृत्यु दर
⇨ खुराक नहीं (स्कैवेंजिंग)	⇨ स्थानीय खुराक (सेमी स्कैवेंजिंग)	⇨ संतुलित आहार
⇨ टीकाकरण नहीं	⇨ रानीखेत (न्यू कैसेल) रोग टीकाकरण	⇨ विविध टीकाकरण योजनायें
⇨ दवाई नहीं	⇨ कम दवाई/स्थानीय दवाई	⇨ सम्पूर्ण औषधि
⇨ घर नहीं	⇨ साधारण घर	⇨ पिंजड़े या डीप लिटर वाले घर

⇨ अंडा उत्पादन: 30 - 50 अंडा/प्रति वर्ष/ प्रति मुर्गी	⇨ अंडा उत्पादन: 50 - 150 अंडा/प्रति वर्ष/ प्रति मुर्गी	⇨ अंडा उत्पादन: 250- 300 अंडा/प्रति वर्ष/ प्रति मुर्गी
⇨ दीर्घकालिक जनन अवधि	⇨ अल्पकालिक जनन अवधि	⇨ प्रजनन नहीं
⇨ विकास दर - 5-10 ग्राम प्रति दिन	⇨ विकास दर - 10-20 ग्राम प्रति दिन	⇨ विकास दर - 50-55 ग्राम प्रति दिन

अनुबंध 2: बांग्लादेश पोल्ट्री मॉडल में हित धारक

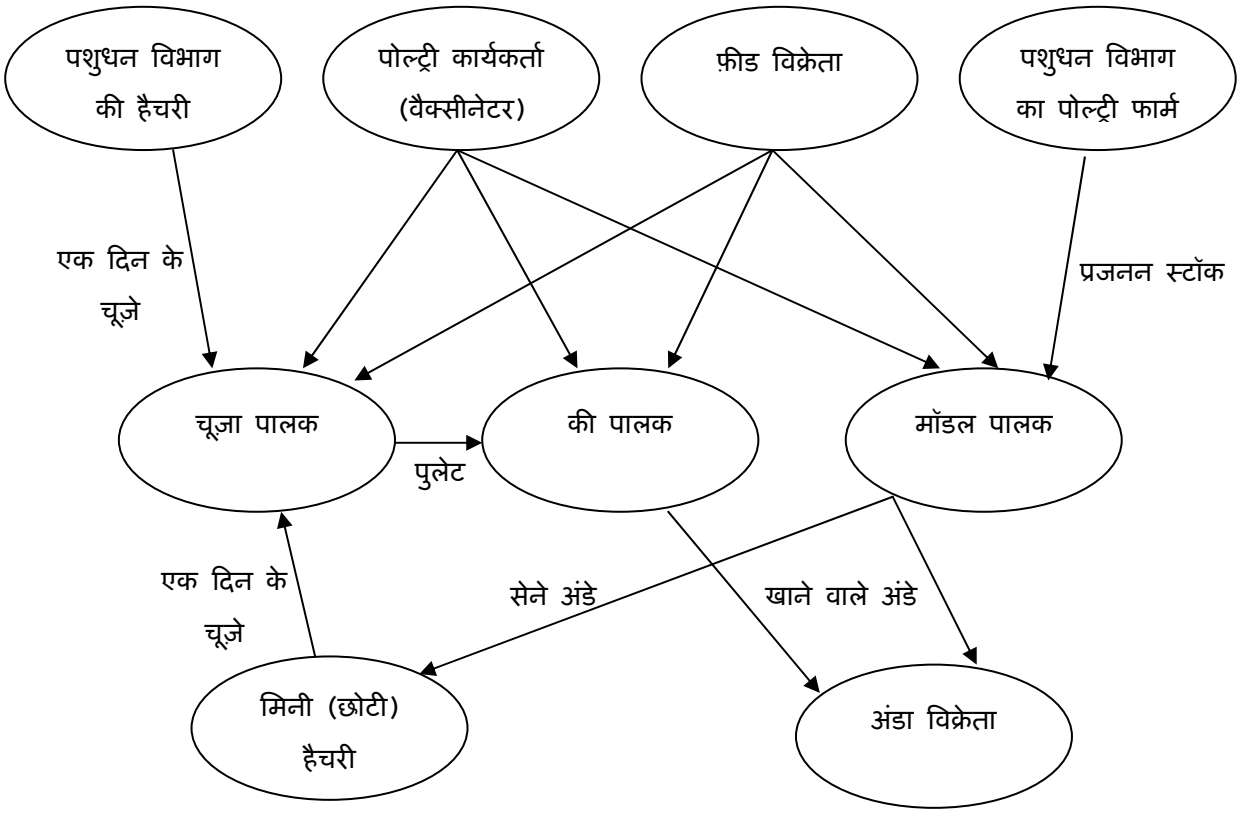

इस प्रणाली के मुख्य खिलाड़ियों में शामिल हैं - 1) पोल्ट्री वैक्सीनेटर/विस्तार कार्यकर्ता, जो कुछ बुनियादी उपचार एवं पोल्ट्री प्रबंधन पर सलाह प्रदान करते हैं, 2) पोल्ट्री पालक - परियोजना के लक्ष्य समूह जो वाणिज्यिक स्तर पर अथवा अर्द्ध स्कैवेंजिंग स्तर पर कुक्कुटों का पालन करते हैं, 3) मुर्गियों के बच्चों को पालने की इकाइयां - जो एक दिन के बच्चे का छह सप्ताह तक पालन करते हैं 4) आहार विक्रेता जो पूरक आहार मुहैया कराते हैं, 5) अंडा संग्राहक जो बाजार के साथ संपर्क मुहैया कराते हैं (अहूजा, 2007) । साल दर साल इस मॉडल में सुधार लाया जाता रहा तथा गैर सरकारी संगठनों (डीएलएस के सहयोग में) ने इसे अपनाया तथा डीएएनआईडीए, आईएफएडी और एडीबी आदि ने इसमें सहयोग किया।

* की पालक – छोटे-धारक जो 5 – 10 पक्षी रखते हैं।

** मॉडल पालक – पशुधन विभाग से मिले पेरेंट स्टॉक से उपजाऊ अंडे पैदा करते हैं। एक क्षेत्र कार्यालय के अधीन 24 मॉडल पालक होते हैं।

*** पूलेट – एक छोटी मुर्गी जिसकी उम्र 1 वर्ष से कम हो।

अनुबंध 3: जिलावार पोल्ट्री वैक्सीनेटर की तैनाती

क्रम संख्या	जिला	पोल्ट्री वैक्सीनेटर की संख्या	क्रम संख्या	जिला	पोल्ट्री वैक्सीनेटर की संख्या
01.	मानिकगंज	480	26.	राजशाही	610
02.	गाजीपुर	-	27.	नवगांव	420
03.	तंगैल	670	28.	बोगरा	720
04.	जमालपुर	490	29.	जॉयपुरहट	520
05.	शेरपुर	340	30.	रंगपुर	550
06.	किशोरगंज	510	31.	बरिसाल	400
07.	नेट्रोकोना	500	32.	पंचागोर	200
08.	म्यामेनसिंह	860	33.	ठाकुरगांव	430
09.	नरसिंगडी	370	34.	दिनाजपुर	640
10.	नारायणगंज	130	35.	गायबंधा	510
11.	कुश्तिया	380	36.	नोआखाली	440
12.	सतखिरा	330	37.	कोमिला	1,010
13.	खुलना	210	38.	चांदपुर	500
14.	जेसौर	530	39.	लक्ष्मीपुर	380
15.	चौदंगा	290	40.	बागरहाट	460
16.	जिनाईदाह	440	41.	गोपालगंज	240
17.	मेहरपुर	130	42.	भोला	240
18.	फरीदपुर	250	43.	झालोकाठी	260
19.	राजबारी	340	44.	पिरोजपुर	290
20.	मगुरा	330	45.	पटुआखली	300
21.	नरैल	200	46.	बरगुना	200
22.	सिराजगंज	450	47.	मदारीपुर	210
23.	कुरिग्राम	360	48.	सारियतपुर	250
24.	पाबना	550	49.	लालमोनिरहाट	300
25.	नटोर	380	50.	निलफामारी	300
				कुल योग	19,900

अनुबंध 4: पोल्ट्री वैक्सीनेटर की 5 दिवसीय प्रशिक्षण माडयूल

<table>
<tr>
<td>दिवस – 1
⇨ मुर्गी पालन और टीकाकरण के उद्देश्य
⇨ मुर्गी के नस्ल
⇨ स्थानीय और संकर पक्षियों के बीच अंतर
⇨ अंडे सेने का चुनाव
⇨ गर्मियों और जाड़े के दौरान हैचिंग और टेबल अंडों का भंडारण</td>
<td>दिवस – 2
⇨ बच्चे वाली मुर्गी का चुनाव
⇨ बच्चे पैदा करने की प्रक्रिया
⇨ बच्चे पैदा करने वाली मुर्गी की देखभाल
⇨ अच्छे अंडे देने वाली मुर्गी की विशेषता
⇨ मुर्गी के एक दिन के बच्चे का सामान्य दिनों में पालन-पोषण
⇨ आहार और आहार खिलाना
⇨ आहार की सामग्रियां
⇨ संतुलित आहार कैसे तैयार करें
⇨ मुक्त क्षेत्र आहार</td>
</tr>
<tr>
<td>दिवस – 3
⇨ आहार की जरूरत और अनुपूरक आहार की आपूर्ति
⇨ विभिन्न प्रकार के आहार एवं पेय
⇨ रात्रि आश्रय की आदर्श स्थिति
⇨ स्वस्थ पक्षियों की विशेषता
⇨ अंडे के उत्पादन को प्रभावित करने वाले कारक
⇨ मुर्गे और मुर्गी का अनुपात
⇨ रानीखेत, हैजा, पॉक्स, कॉक्सीडियोसिस, गुमबौरो, परजीवी उत्पीड़न और कुपोषण जैसी मुर्गियों की सामान्य बीमारियां
⇨ रानीखेत रोग के लक्षण और इलाज</td>
<td>दिवस – 4
⇨ रानीखेत की रोकथाम
⇨ रानीखेत का टीकाकरण कार्यक्रम
⇨ पॉक्स, गुमबौरो, कॉक्सीडियोसिस एवं हैजा के लक्षण, व्यापकता, रोकथाम और इलाज
⇨ अंदरूनी परजीवी (कृमि) से पीड़ित: लक्षण एवं रोकथाम
⇨ बाहरी परजीवी (चिचड़ी, कुटकी इत्यादि): लक्षण एवं रोकथाम
⇨ कुपोषण के लक्षण एवं इलाज</td>
</tr>
<tr>
<td colspan="2">दिवस – 5
⇨ टीकाकरण प्रक्रिया का प्रदर्शन
⇨ टीकाकरण के लिए विभिन्न प्रकार के टीके और उनके लिए उपयुक्त समय
⇨ टीकाकरण के लिए पक्षियों के चयन मानदंड
⇨ विभिन्न प्रकार के विषाणु टीकों के संरक्षण एवं भंडारण, तथा परिवहन तकनीकें
⇨ विभिन्न प्रकार के टीकों के अवमिश्रण मानदंड एवं खुराक
⇨ टीकाकरण से पहले और टीकाकरण के दौरान ली जाने वाली सावधानियां
⇨ जैव सुरक्षा के उपाय
⇨ बीमारियों को रोकने के लिए सिफारिशी उपाय
⇨ मृत पक्षियों का निपटान
⇨ टीकाकरण की जिम्मेदारियों के सारांश</td>
</tr>
</table>

अनुबंध 5: पशु रोग अधिनियम, 2003 के बारे में जानकारी

अधिनियम के अनुच्छेद 21 का चित्रण नीचे है-

जो व्यक्ति इस अध्यादेश के तहत पंजीकृत नहीं हैं वे प्रैक्टिस नहीं करेंगे

1. पंजीकृत पशुचिकित्सा प्रैक्टिशनर के अतिरिक्त कोई भी व्यक्ति, दवाईयों से चिकित्सा अथवा सर्जरी के बारे में प्रैक्टिस नहीं कर सकता है अथवा अपने को प्रैक्टिस करने वाला नहीं बता सकता है, जब तक इस कानून के इस प्रावधान के उलट कोई और कानून लागू नहीं हो जाता।
2. परिषद द्वारा सरकारी राजपत्र में अधिसूचना के तौर पर तय तिथि के बाद जो भी उप-धारा (1) के प्रावधानों के विरुद्ध काम करेगा उसे जुर्माने के साथ दंड दिया जायेगा जो पांच सौ टका तक हो सकता है।
3. उप-धारा (1) के प्रावधान उस व्यक्ति पर लागू नहीं होता जो अधिनियम के तहत् निम्नलिखित काम कर रहा है।
    - जान बचाने या दर्द से राहत दिलाने के उद्देश्य से किसी भी जानवर को प्राथमिक चिकित्सा प्रदान करना।
    - दर्दरहित विधि के द्वारा किसी भी जानवर का विनाश
    - किसी भी जानवर की बधिया करना या किसी भी मुर्गी या पक्षी की बधिया करना
    - पशु या कुत्ते की आंखें खुलने से पहले उनकी डॉकिंग
    - कुत्ते की आंखें खुलने से पहले इसके पंजे का विच्छेदन
    - किसी भी जानवर, मुर्गी या पक्षी का टीकाकरण

अनुबंध 6: वैक्सीनेटर द्वारा पालन किये जाने वाले टीकाकरण कार्यक्रम का अवलोकन

उम्र	टीके का नाम	टीकाकरण का मार्ग	खुराक प्रति पक्षी
1-3 दिन	बी सी आर डी वी (एफ स्ट्रेन)	इंट्राआकुलर	2 बूंद
21 दिन	बूस्टर बी सी आर डी वी (एफ स्ट्रेन)	इंट्राआकुलर	2 बूंद
6-7 सप्ताह	फॉउल पॉक्स लाइव	विंग वेब सबक्यूटेनियस	एक बार
60वें दिन	आर डी वी लाइव (एम स्ट्रेन)	इंट्रामस्कुलर	1 मिली
90वें दिन	फॉउल पॉक्स बूस्टर	इंट्रामस्कुलर	0.2 मिली

फॉल कॉलरा: टीकाकरण सिर्फ उन्हीं क्षेत्रों और फार्म में किया जाता है जहां संक्रमण की व्यापकता हो।

अनुबंध 7: "वैक्सीनेटर/ विस्तार कार्यकर्ता" के हस्तक्षेप के परिणामस्वरूप परिवर्तित रिकार्ड

संख्या	सर्वेक्षण संकेतक	हस्तक्षेप से पहले	हस्तक्षेप के एक वर्ष बाद
1.	सर्वेक्षण में शामिल परिवार	97	97
2.	मुर्गी/परिवार की औसत संख्या	2.7	8.6
3.	पोल्ट्री मृत्यु की दर	21.3	7.6
4.	मुर्गी की बिक्री	3.4	20.6
5.	अंडों (संख्या) की बिक्री	93	768
6.	अंडों की पारिवारिक खपत (संख्या)	43	186
7.	मुर्गी की पारिवारिक खपत (किलोग्राम)	1.6	16.7
8.	टीके में अंडों और मुर्गी की बिक्री से औसत सालाना आय	400.00	2,919.00
	अमरीका में अंडों और मुर्गी की बिक्री से औसत सालाना आय डालर में	8.00	60.00

स्रोत: फताह 1999

संदर्भ

1. आहूजा, वी. सेन, ए., 2007 । विकासशील देशों में छोटे स्तर पर पोल्ट्री उत्पादन के लिए संभावना और जगह। डब्ल्यू पी नं. 2007। http://www.iimahd.ernet.in/publications/data/2007-12-02Ahuja.pdf पर उपलब्ध है।
2. आलम, जे., 1997 । सामाजिक - आर्थिक प्रभाव का अध्ययन, डेनिश इंटरनेशनल डेवलपमेंट असिस्टेंस (डी ए एन आई डी ए)।
3. एशियन डेवलपमेंट बैंक, 2002। भागीदारी विकास कार्यक्रम बांग्लादेश की मूल्यांकन रिपोर्ट लोन. 1524. बी एक डब्ल्यू (एस एफ)।
4. एशियन डेवलपमेंट बैंक 2007। बांग्लादेश की त्रैमासिक आर्थिक अपडेट – 2007। बांग्लादेश रेसिडेंट मिशन, ढाका, बांग्लादेश http://www.adb.org/Documents/News/BRM/brm-200702.asp पर उपलब्ध है।
5. बेगम, के., खान, एम. एस. आर., रहमान, एम. बी. कैफी, एम. ए., दास, एम. मामुन, एस. ए. ए., 2006। टीका लगाये गये और टीका नहीं लगाये गये मुर्गी के बच्चों में बेबी चिक रानीखेत वैक्सीन प्रशासन की जांच। ऑरिजिन बांग्ल. जे. वेट. मेड. (2006) 4 (2): 93-96 http://www.banglajol.info/index.php/BJVM/article/view/1290 पर उपलब्ध है।
6. बी आर ए सी 1996। चरण की समाप्ति रिपोर्ट: 1994-96 संवेदनशील समूह के विकास के लिए आय का सृजन।
7. बी आर ए सी 2000 रिपोर्ट 2000। http://www.communities.gov.uk/documents/planningandbuilding/pdf/133208.pdf पर उपलब्ध है।
8. दास, एस. सी., चौधरी, एस. डी. खातुन, एम. ए., निशिबोरी, एम., इसोब, एन., एवं योसिमुरा, वाई. 2008। बांग्लादेश में पोल्ट्री उत्पादन प्रोफाइल एवं अनुमानित भविष्य प्रोजेक्शन, वर्ल्ड्स पोल्ट्री साइंस जर्नल, वाल्युम 64, मार्च 2008: http://journals.cambridge.org/action/displayAbstract?aid=1854276 पर उपलब्ध।
9. धामंकर, एम., कृश्णागोपाल, जी. वी., पिका-सियामारा, यू., मार्सी, एल., धवन, एम. 2008। लर्निंग इवेंट 1: छोटे स्तर पर पोल्ट्री उत्पादन कार्यवाही http://sapplpp.org/informationhub/learning_event_small_scale-poultry-production-proceedings पर उपलब्ध।
10. डी एल एस, 2008। नेशनल एवियन इंफ्लुएंजा एंड ह्युमन पैंडेमिक इंफ्लुएंजा प्रीपेयर्डनेस एंड रेस्पांस प्लान बांग्लादेश। बांग्लादेश एंड एफ ए ओ, 2006-08। www.sdnpbd.org/sdi/issues/health/birdflue/document/avianInfluenzaresponseplan.pdf पर उपलब्ध।
11 डॉलबर्ग, एफ. 2004। 'रिव्यू ऑफ हाउसहोल्ड्स पोल्ट्री प्रोडक्शन ऐज अ टूल इन पोवर्टी रिडक्शन विद फोकस ऑन बांग्लादेश एंड इंडिया'। इन: आहुजा, विनोद (संपादक), 'लाइव स्टॉक एंड

लाइवलिहुड्स: चैलेंजेज एंड अपरचुनिटीज फॉर एशिया इन द इमर्जिंग मार्केट इनवायरमेंट' एन डी डी बी, एफ ए ओ, आनंद, इंडिया, रोम, इटली।

12. डॉलबर्ग, एफ. 2003, 'रिव्यू ऑफ हाउसहोल्ड्स पोल्ट्री प्रोडक्शन ऐज अ टूल इन पोवर्टी रिडक्शन विद फोकस ऑन बांग्लादेश एंड इंडिया'। एफ ए ओ, प्रो- पुअर लाइवस्टॉक पॉलिसी इनिसियेटिव। वर्किंग पेपर नं0 6: (20.62008):
http://www.fao.org/ag/againfo/programmes/en/pplpi/docarc/wp6.pdf पर उपलब्ध

13. डॉलबर्ग, एफ., 2008। पोल्ट्री सेक्टर कंट्री रिव्यू: बांग्लादेश, एफ ए ओ, रोम, इटली:
ftp://ftp.fao.org/docrep/fao/011/ai319e/ai319e00.pdf पर उपलब्ध

14. फताह, के. ए., 1999। पोल्ट्री ऐज अ टूल - इन पोवर्टी इरैडिकेशन एंड प्रमोशन ऑफ जेंडर इक्वलिटी इन फ्रांड्स डॉलबर्ग एंड पॉल हेनिंग पीटरसन (इड्स), वुमेन इन एग्रीकल्चर एंड मॉडर्न कम्युनिकेशन टेक्नोलॉजी। प्रोसीडिंग्स ऑफ अ वर्कशॉप। ट्युन लैंडबोस्कोले, डेनमार्क।

15. जी ओ बी 2008। मिनिस्ट्री ऑफ फिनान्स - बांग्लादेश इकोनॉमिक रिव्यू 2008।
http://www.mof.gov.bd/en/index.php?option=com_content&task=view&id=68 पर उपलब्ध।

16. जब्बार, एम. ए., इस्लाम, एस. एम. एफ., 2007। स्मॉलहोल्डर पोल्ट्री मॉडल फॉर पोवर्टी एनेवियेशन इन बांग्लादेश: अ रिव्यू ऑफ इविडेंस ऑन इम्पैक्ट, इंटरनेशनल लाइवस्टॉक रिसर्च इंस्टीच्यूट, आदिस अबाबा।

17. मिनिस्ट्री ऑफ फिशरीज एंड लाइवस्टॉक 2007, गवर्नमेंट ऑफ द पिपल्स रिपब्लिक ऑफ बांग्लादेश, नेशनल लाइवस्टॉक पॉलिसी 2007:
http://www.mofl.gov.bd/pdf/Livestock_%20Policy_Final.pdf पर उपलब्ध।

18. रहमान, एम. एच., 2003। लाइवस्टॉक सेक्शन रिव्यू एंड फ्यूचर डेवलपमेंट असेसमेंट। पॉलिसी एंड प्लानिंग सपोर्ट यूनिट/ मिनिस्ट्री ऑफ फिशरीज एंड लाइवस्टॉक, ढाका।

19. रहमान, एच. जेड, 2006। बांग्लादेश 2015: एचीवमेंट्स एंड फयूचर चैजेंजेज। एशिया 2015 सम्मेलन के लिए पेपर तैयार, मार्च 6-7, 2006:
http://www.asia2015conference.org/pdfs/PPRCRound.pdf (July 16, 2008). पर उपलब्ध।

20. रहमान एम. एच. 2008। रोग निगरानी सलाहकार, एशिया डेवलपमेंट बैंक/ एम ओ एफ ल। पी एल डी पी- 2, पर्सनल कम्युनिकेशन।

21. रेहान, एस. एवं महमूद, एन., 2008। ट्रेड एंड पोवर्टी लिंकेज- अ केस स्टडी ऑफ द पोल्ट्री इंडस्ट्री इन बांग्लादेश, सीयूटीएस सीआईटीईई वर्किंक पेपर नं. 6/2008

22. सालेक, एम. ए. 1999। स्केलिंग अप: क्रिटिकल फैक्टर्स इन लीडरशिप, मैनेजमेंट, ह्युमन रिसार्स डेवलपमेंट एंड इंस्टीच्युशन बिल्डिंग इन गोईंग फ्रॉम पायलट टू लार्ज स्केल इम्पलीमेंटेशन: द बी आर ए सी पोल्ट्री मॉडल इन बांग्लादेश, ढाका:
http://www.fao.org/DOCREP/004/AC154E/AC154E02.htm पर उपलब्ध।

23. सालेक, एम. ए. 2001। पोल्ट्री ऐज अ टूल इन पोवर्टी एलेवियेशन: बांग्लादेश में ग्रामीण गरीबों के लिए एक विशेष कार्यक्रम। इन दूसरे अंतर्राष्ट्रीय पोल्ट्री शो एवं सेमिनार की प्रोसीडिंग, ढाका, बांग्लादेश, द वल्ड्र्स पोल्ट्री साइंस असोसियेशन, बांग्लादेश ब्रांच, पी पी: 66- 76।
24. सालेक, एम. ए., 2007। पोल्ट्री इंडस्ट्री इन बांग्लादेश: करंट स्टेटस एंड इट्स चैलेंजेज एंड अपरचुनिटी इन द इमरजिंग मार्केट अनवायरमेंट। पोल्ट्री बिजनेस डायरेक्टरी 2007, ढाका।
25. तैमूर, एम. एफ. जे. ए., सिल, बी. के., प्रोधान, ए. एम., जोहान, बी. के., 1998। यूटिलाइजेशन ऑफ पोल्ट्री वैक्सीन्स एंड मॉनीटरिंग देयर पोटेंसी ऐट वेरियस लेवेल्स इन बांग्लादेश, बांग्लादेश लाइवस्टॉक रिसर्च इंस्टीच्यूट, सावर, 1998।
26. जमान, एम. ए., रहमान, एम. एच., 2006। अ स्टडी ऑन लाइवस्टॉक/ पोल्ट्री वैक्सीन प्रोडक्शन सप्लाई एंड डेलिवरी सिस्टम ऑन बांग्लादेश। पी पी एस यू/ एम ओ एफ एल, ढाका।

संकेताक्षर

ए डी बी	एशियन डेवलपमेंट बैंक
बी बी एस	बांग्लादेश ब्यूरो ऑफ स्टैटिस्टिक्स
बी डी पी	बी आर ए सी डेवलपमेंट प्रोग्राम
बी सी आर डी वी	बेबी चिक रानीखेत डिजीज वैक्सीन
बी डी टी	बांग्लादेश टका
बी आर ए सी	बांग्लादेश रूरल एडवांसमेंट कमिटी
डी ए एन आई डी ए	दानिश इंटरनेशनल डेवलपमेंट एजेंसी
डी एल एस	डिपार्टमेंट ऑफ लाइवस्टॉक सर्विस (पशुधन विभाग)
डी ओ सी	डे ओल्ड चिक्स
एफ ए ओ	फूड एंड एग्रीकल्चरल ऑर्गनाइजेशन
जी ओ बी	गवर्नमेंट ऑफ बांग्लादेश
जी डी पी	ग्रॉस डोमेंस्टिक प्रोडक्ट
जी पी	गूड प्रैक्टिस
एच पी ए आई	हाई पैथोजेनिक एवियन इंफ्लुएंजा
एन एच	हाउसहोल्ड्स
एच वाई वी	हाई यील्डिंग वेरायटी
आई एफ ए डी	इंटरनेशनल फंड फॉर एग्रीकल्चर डेवलपमेंट
आई जी वी जी डी	इनकम जेनरेजशन फॉर वलनरेबल ग्रूप डेवलपमेंट
एम ओ एफ एल	मिनिस्ट्री ऑफ फिशरीज एंड लाइवस्टॉक
एन जी ओ	नॉन गवर्नमेंट ऑर्गनाइजेशन
एन सी डी	न्यू कासिल डिजीज
पी एल डी पी	पार्टिसिपेटरी लाइवस्टॉक डेवलपमेंट प्रोग्राम
आर डी वी	रानीखेत डिजीज वैक्सीन
एस एल डी पी	स्मॉलहोल्डर लाइवस्टॉक डेवलपमेंट प्रोजेक्ट
टी एल ओ	थाना लाइवस्टॉक ऑफिसर
टी एम एस एस	थेंगामारा मोहिला साबुज संघ
वी जी डी	वलनरेबल ग्रूप डेवलपमेंट
वी वी पी एल	वेटेरिनरी वैक्सीन प्रोडक्शन लैबोरेट्री
वी ओ	विलेज ऑर्गनाइजेशन
डब्ल्यू एफ पी	वर्ल्ड फूड प्रोग्राम

ब्राक, बांग्लादेश का सबसे बड़ा दक्षिणी विकास संगठन है जिसमें **61** प्रतिशत महिलाओं के साथ कुल **120,337** लोग कार्यरत हैं और गरीबी उन्मूलन तथा गरीबों के सशक्तिकरण के दोहरे उद्देश्य के साथ कार्य कर रहें हैं। यह एक स्वतंत्र और लगभग स्वयं वित्तपोषित प्रतिमान के रूप में उभरा है। ब्राक ऐसे लोगों के साथ काम करता है जिनकी ज़िंदगी बेहद गरीबी, अशिक्षा, बीमारी और बाधाओं के वर्चस्व के द्वारा प्रभावित है। बहुमुखी विकास के उपायों के साथ यह बांग्लादेश के गरीब लोगों की ज़िंदगी की गुणवत्ता में एक सकारात्मक बदलाव लाया है, साथ ही गरीबी में कमी और सामाजिक प्रगति पर राष्ट्रीय और वैश्विक नीति के स्तर पर बदलाव लाया है। महिलाएं और लड़कियां ब्राक के गरीबी विरोधी दृष्टिकोण का केन्द्रीय विश्लेषणात्मक लेंस रहीं हैं, दोनों ही अपनी कमज़ोरियों को पहचान रहीं हैं लेकिन उनमें बदलाव की प्यास भी है।

ब्राक पर अधिक जानकारी के लिए, उनके वेबसाइट http://www.brac.net पर संपर्क करें।

इस गुड प्रैक्टिस के बारे में

बांग्लादेश में **19,900** पोल्ट्री वैक्सीनेटर आज पोल्ट्री को बीमारियों से सुरक्षा प्रदान करने के लिए रखवालों के रूप में खड़े हैं। **20** वर्ष पुराने सरकार - गैर सरकारी संगठन के सहयोग के माध्यम से बांग्लादेश केन्द्रीकृत मॉडल को विकेन्द्रित सेवा प्रदान करने के लिए अपने कार्य मे बदलाव लाया है। इस बदलाव से टीकाकरण सेवाएं, प्रचार संदेश और निगरानीं, देश के दूरस्थ क्षेत्रों में पोल्ट्री का पालन पोषण करने वालों तक पहुंचती हैं। रोग संरक्षण का खर्च सिर्फ एक टका हैं, लेकिन यह बेहतर आयं, पोषणं, रोजगार और सशक्तिकरण लाता है। पोल्ट्री वैक्सीनेटर गरीब मुर्गी पालको को सेवाएं प्रदान करने के लिए एक नयी प्रवृति ला रहे हैं।

यह लेख इस अभिनव मॉडल के विकास और देश के पोल्ट्री परिदृश्य पर इसके प्रभाव को दर्शाता है।

साउथ एशिया प्रो-पुअर लाईवस्टोक पोलिसी प्रोग्राम

राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड और सयुंक्त राष्ट्र के खाद्य एवम् कृषि संगठन का उपकम

क्षेत्र कार्यालयः

एनडीडीबी हाऊस, पोस्ट बॉक्स **4906**, सफदरजंग एनक्लेव, नई दिल्ली, **110 029**, भारत

टेलीफ़ोनः **+91 (0) 11 2619 7851 / 7649** • फैक्सः **+91 (0) 11 2618 9122**

ई मेलः sapplpp@sapplpp.org

वेवसाईटः www.sapplpp.org

सहभागी संस्थाएं

बाक
बाक् सेन्टर
75 मोहाखाली ढाका **1212**
बांग्लादेश
टेलीफ़ोनः **+880 2 88241807**
एक्सटेनशनः **2311**
फैक्सः **+880 2 8823542, 8826448**
ई मेलः rouf.s@brac.net

पशुधन विभाग
कृषि मंत्रालय
थिम्पु
भुटान
टेलीफ़ोनः **+975 (0) 2 351102**
फैक्सः **+975 (0) 2 322094, 351222**
ई मेलः tshering@sapplpp.org
naip@druknet.bt

बाएफ डीवेलपमेन्ट रीसर्च फाउनडेशन
डॉ मणीभाई देसाई नगर, एन एच **4**
वरजे, पुने, **411058**, भारत
टेलीफ़ोनः **+91 (0) 20 25231661**
फैक्सः **+91 (0) 20 25231662**
ई मेलः sepawar@sapplpp.org
sepawar@baif.org.in